सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 17 • अंक 10 • 5 जनवरी 2021 • मूल्य : 20 रु.

पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की ३५वीं पुण्यतिथि मनाई

आचार्य जिनमनोज्ञसूरिजी म. का दीक्षा दिवस मनाया

श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः श्री चन्द्रप्रभस्वामिने नमः श्री महावीरस्वामिने नमः

अनंतलब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नमः

खरतरबिरुदधारक श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरि सदगुरूभ्यो नमः

पू. गणनायक श्री सुखसागर-सदगुरुभ्यो नमः

श्री ब्यावर नगरे

जीर्णोद्धारित श्री चंद्रप्रभ स्वामी जिनालय की

भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे

सकल श्री संघ को भावभरा आमंत्रण

पावन निश्रा

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक मरुधर मणि खरतरगच्छाधिपति

आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा.,

पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म. सा.

पावन सानिध्य

पूज्या साध्वी श्री संयमज्योतिश्रीजी म.सा.,

पू. साध्वी श्री संयमगुणाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री संयमसाक्षीश्रीजी म.सा.

पूज्य गुरुदेव श्री का प्रवेश -
ता. 13 जनवरी 2021

प्रतिष्ठा शुभ दिवस-
वि.सं. 2077 पौष सुदि 2 शुक्रवार,
ता. 15 जनवरी 2021

निवेदक

सेठ धूलचंद कालूराम कांकरिया चेरिटेबल ट्रस्ट, ब्यावर

निहालचंद शांतिलाल सुनीलकुमार एवं समस्त कांकरिया परिवार

संपर्क सूत्र-
अतुल कांकरिया- 98290 71435, दीपचंद कोठारी- 98295 12187
राजेश बरडिया- 98280 51380

महोत्सव स्थल
श्री चंद्रप्रभु जी मंदिर
स्टेशन रोड, पो. ब्यावर पिन-305901 (राज.)

आगम मंजूषा
भगवान महावीर

पाणिवह-मुसावाया-अदत्त-मेहूण-परिग्गहा विरओ।
राईभोयणविरओ जीवो भवइ अणासवो॥

प्राणीवध, मृषावाद, अदत्त-ग्रहण, अब्रह्मचर्य, परिग्रह और रात्रि-भोजन से विरत जीव अनाश्रव (आश्रवरहित-नए पापकर्म से रहित) होता है।

One who has abstained from injury to living beings, untruth, theft, sexual indulgence, possession of wealth and also from taking meals at night does not commit new sins.

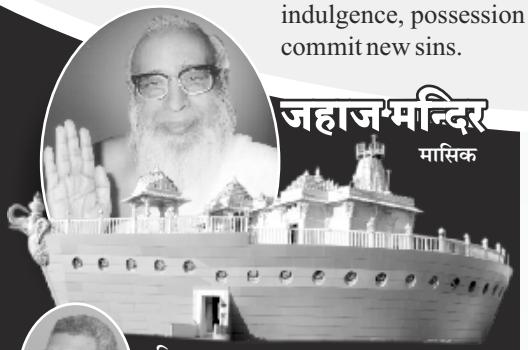

जहाज मन्दिर
मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 17 अंक : 10 5 जनवरी 2021 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	हैदराबाद चारकमान दादावाड़ी	05
3. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	हैदराबाद (कोठी)	06
4. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	07
5. पीतलिया/पीथलिया, डागा गोत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	09
6. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	10
7. विहार डायरी	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	11
8. अधूरा सपना	डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	14
9. शील तारणहार	मुनि समयप्रभसागरजी म.	16
10. श्री आदिनाथाष्टकम्	मुनि मलयप्रभसागरजी म.	20
11. गिरनारी मन को लुभावे	मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी म.	21
12. पुण्य धरा माण्डवला	प्रतिभा बोथरा	22
13. एक दर्दभरा अध्याय	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	23
14. 'मनोज्ञ' संयम दिन आया है	साध्वी श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी म.	25
15. विमलजी बोथरा : जिन शासन के उज्ज्वल नक्षत्र	मुमुक्षु रजत सेठिया, चोहटन	26
16. समाचार दर्शन	संकलित	27
17. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	34

विशिष्ट दिवस

6 जनवरी आ. श्रीजिनहरिसागरसूरिजी म. पुण्यतिथि, मेड़ता रोड, फलोदी पार्श्वनाथ
8 जनवरी श्री पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक
9 जनवरी श्री पार्श्वनाथ दीक्षा कल्याणक
12 जनवरी पाक्षिक प्रतिक्रमण, पू. उपाध्याय श्री क्षमाकल्याण जी म. की 204वीं पुण्यतिथि
19 जनवरी श्री विमलनाथ केवलज्ञान कल्याणक
23 जनवरी आ. श्री जिनआनंदसागरसूरि म. पुण्यतिथि, पालीताना
24 जनवरी रोहिणी
27 जनवरी पाक्षिक प्रतिक्रमण
1 फरवरी पू. गणनायक सुखसागर जी पुण्यतिथि, फलोदी
9 फरवरी मेरु तेरस, श्री आदिनाथ मोक्ष कल्याणक
10 फरवरी पाक्षिक प्रतिक्रमण

नवप्रभात

प्रश्न उपस्थित हुआ है- व्यक्ति का जीवन कैसा होना चाहिये!

उत्तर की अभिव्यक्ति हुई- व्यक्ति को अपने जीवन में सहनशीलता का विकास करना चाहिये। जीवन सदा सोने जैसा खरा होना चाहिये... हीरे जैसा कीमती होना चाहिये।

प्रश्नकर्त्ता ने उत्तर को स्पष्टतया समझाने का निवेदन किया है।

समझाने के लिये चिंतन की धारा बह चली है। व्यक्ति को सदा एक जैसा होना चाहिये... एक जैसा रहना चाहिये।

एक जैसा रहने और होने का तात्पर्य क्या है! क्योंकि चाहकर भी व्यक्ति एक जैसा तो नहीं रह पाता। वह लगातार बदलता है। शरीर की दृष्टि से भी... विचारों की दृष्टि से भी... अनुभव की दृष्टि से भी...!

जिसे बदलना है वह तो बदलेगा ही। उसे बदलने से रोका नहीं जा सकता। पर जो बदल रहा है, उसके पीछे जो उसका दिव्य व्यक्तित्व है, वह सदा एक जैसा होना चाहिये। अर्थात् उसकी मूल्यवत्ता बनी रहनी चाहिये। हाँ, मूल्य बढ़े, वह स्वीकार्य ही नहीं, आदरणीय है। पर मूल्य घटना नहीं चाहिये।

जैसे अलग-अलग स्थितियों, परिस्थितियों में व्यक्ति कभी अपने स्वभाव व व्यवहार से सौ करोड का हो जाता है तो कभी दो कौडी का भी नहीं रह पाता। यह जीवन की सार्थकता या ऊँचाई नहीं।

इसका सीधा अर्थ है- व्यक्ति कभी भी अपने मूल स्वभाव पर स्थितियों या परिस्थितियों को हावी न होने दे। वे कैसी भी हों, वह वैसा ही रहेगा, जैसा है।

जैसे सोना! उसे आग में डालो तो भी वही चमक देगा और आभूषण बनाकर धारण करो तब भी वही चमक देगा। उसकी मूल्यवत्ता में कोई अन्तर नहीं आयेगा।

हीरा कहीं भी हो, उसकी मूल्यवत्ता में कोई फर्क नहीं आता।

व्यक्ति को भी अपने जीवन का ऐसा ही निर्माण करना है। इसके लिये सहनशीलता के क्षेत्र में प्रबल पुरुषार्थ की अपेक्षा है।

दूसरों की समझ उसे कषाय की प्रेरणा देती है। स्वयं की समझ उसे अपनी मूल्यवत्ता से परिचित कराती है।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 10

हैदराबाद (चारकमान दादावाड़ी)

–मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
– साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

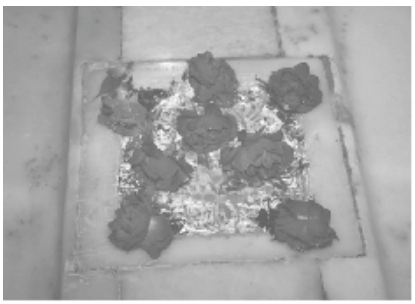

निजामों की नगरी हैदराबाद हवेलियों के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। लगभग 55-60 लाख की आबादी वाले इस क्षेत्र में मुस्लिम, रेड्डी, राव, गौड़ जैसे सभी जाति के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। इस चारकमान क्षेत्र में अग्रवाल समाज का बोलबाला है। 35000 से 40000 तक के जैन जनसंख्या के इस क्षेत्र में 35-40 प्रतिशत मंदिरमार्गी, 30-35 प्रतिशत स्थानकवासी एवं तेरापंथी और दिगम्बर दोनों जैन बराबर में है। यह क्षेत्र मोतियों व नगीनों के व्यापार के लिये प्रसिद्ध है।

इसी हैदराबाद शहर के उपनगर चारकमान में श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर है, जिसमें वर्तमान चौबीसी के तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान की पूर्वमुखी स्वर्णमयी प्रतिमा विराजित है। प्रभु प्रतिमा के पृष्ठ भाग में स्वर्ण का अति सुन्दर कार्य देखते ही मन मोह लेता है। मूलनायक प्रभु जी के बायीं ओर श्री चन्द्रप्रभु भगवान व दायीं ओर युगादिदेव श्री आदीश्वर भगवान विराजमान हैं। मंदिर का मूल गंभारा लाल ग्रेनाइट के पत्थर से बना हुआ है। गंभारे के चारों तरफ हॉल है और इसी हॉल पर दो-गुना ऊँचाई लिये गंभारा, हॉल के अन्दर ही मंदिर की डिजाइन लिए हुए हैं।

मंदिर की ध्वजा ऊपर छत पर है एवं शिखरयुक्त है। जिनालय में अलग-अलग गोखले में माणिभद्र बाबा, चक्रेश्वरी देवी, पार्श्व यक्ष, पद्मावती देवी की प्रतिमा विराजमान है।

मूलनायक प्रभु जी के दाहिने तरफ अलग स्वतंत्र कक्ष में पूर्वमुखी दादावाड़ी है, जिसमें तीन गुम्बद वाली छतरी में दादा गुरुदेव की तीन चरण पादुकाएँ विराजित हैं। छतरी के पृष्ठ भाग में दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि जी म.सा., श्री जिनचन्द्रसूरि जी म.सा. एवं श्री जिनकुशलसूरि जी के कांच में स्वर्ण कार्य युक्त चित्र हैं। इनके छतरी पर तीन शिखर हैं।

24 इंच समचौरस चरण शिलायें दोनों तरफ स्थापित हैं, जिसके मध्य में 11.5 इंच का चरण खण्ड व ऊपर शिखर रूपी डिजाइन के मध्य में 8 इंच के समचौरस चरण पादुका। दोनों शिला खण्ड के बीच 9 इंच गुणा 9 इंच की अलग चरण पादुका है।

यहाँ ठहरने के लिए मंदिर के निकट ही सर्वसुविधायुक्त धर्मशाला श्री पार्श्व जैन भवन है। यहाँ पर 700-800 तक दर्शनार्थी ठहर सकते हैं। यहाँ पर 4 कमरे व एक व्याख्यान हॉल व दो साधारण हॉल है। इस दादावाड़ी में प्रतिवर्ष माघ सुदि 5 को मेला भरता है।

दादावाड़ी के निकट अन्य कई भ्रमणीय स्थल भी हैं, जो यात्रियों को भाव-विभोर कर देते हैं। दादावाड़ी से 2 फर्लांग पर चारमीनार है, जो हैदराबाद नगर की शान है और कलागत विशेषता एवं सौन्दर्य के कारण विश्वविख्यात है।

पता :

श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर

21-2-218, चारकमान, हैदराबाद - 500 001 (आंध्र प्रदेश) दूरभाष : 040-2452 6308

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 11

हैदराबाद (कोठी)

मोतियों की नगरी हैदराबाद का कोठी बाजार है, जिसका नाम सुल्तान बाजार भी है। इसी बाजार के बीचों-बीच श्री कोठी जैन श्वेताम्बर अजितनाथ-पारसनाथ मंदिर, जो कि कोठी मंदिर के नाम से विख्यात है, बहुत प्राचीन एवं पुनीत श्रद्धा का स्थल है।

भवन में एक विशाल प्रवेश द्वार है। पोल के अन्दर तोरणद्वार से प्रवेश करने पर मंदिर प्रतिष्ठित है। मंदिर की भमती में प्रसिद्ध तोरण की कारीगरी एवं बनावट अति आकर्षक है। मूल गंभारे में श्री अजितनाथ भगवान की पूर्वमुखी प्रभु प्रतिमा विराजमान है, जिसकी ऊँचाई 44 इंच एवं चौड़ाई 33 इंच की है। प्रभु जी के बायें बाजू श्री कुंथुनाथ भगवान एवं दाहिने बाजू श्री महावीरस्वामी जी विराजमान हैं।

सम्पूर्ण जीर्णोद्धार वि.सं. 2023 में प्रारम्भ हुआ। पूज्य आचार्य श्री जिनउदयसागरसूरि जी म.सा. (तत्कालीन मुनि) की पावन निश्रा में प्रतिष्ठा वि.सं. 2026 ज्येष्ठ सुदि 6 को सुसम्पन्न हुई।

प्रभु प्रतिमा अति-सुन्दर, चमत्कारी व साक्षात् है। गंभारे के बाहर अधिष्ठायक श्री महायक्ष देव एवं अधिष्ठात्री श्री अजितबलादेवी विराजमान हैं। गंभारे के बाहर प्रभु जी के दाहिने श्री अजितनाथ प्रभु की छतरी है एवं गंभारे के बायें स्वतंत्र छतरी में तीन दादा गुरुदेव की प्रतिमाएँ व तिगड़े में ही आगे चौथे दादा गुरुदेव की प्रतिमा विराजमान है। चारों दादा गुरुदेव की प्रतिमा जी मंदिर जी के नीचे माले में प्रतिष्ठित व विराजमान हैं।

पूर्वमुखी मूलनायक दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वर जी महाराज की प्रतिमा कमल पर विराजमान हैं। गुरुदेव की स्वतंत्र छतरी स्थापित है और इस छतरी के आगे काला एवं गोरा भैरव की खड़ी प्रतिमाएँ हैं। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वर जी प्रतिमा की लम्बाई 35 इंच एवं चौड़ाई 21 इंच की है। दादा गुरुदेव मणिधारी जिनचन्द्रसूरि जी एवं दादा श्री जिनकुशलसूरि जी की प्रतिमा की लम्बाई 27 इंच एवं चौड़ाई 21 इंच की है। अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचन्द्रसूरि जी की प्रतिमा की लम्बाई 25 इंच एवं चौड़ाई 20 इंच की है।

मूल गंभारे के पहले माले में हॉल में मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा विराजित है। इस भव्य प्रतिमा का सौम्य, शान्त, गम्भीर रूप बरबस मन को भक्ति भाव की ओर खींच लेता है। हॉल के चारों तरफ 108 पार्श्वनाथ भगवान के फोटो मकराने पर लेमिनेटेड किए हुए लगे हैं।

नीचे की गुरुदेव छतरी के ठीक ऊपर पहले माले में छतरी में चारों गुरुदेवों की चरण पादुकाएँ हैं। मूलनायक दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वर जी की चरण पादुका 150 वर्ष प्राचीन है। श्री जिनकुशलसूरि जी के चरण 9 इंच लम्बे व 8 इंच चौड़े हैं। श्री जिनदत्तसूरि जी के चरण 12 इंच लम्बे एवं 11.5 इंच चौड़े हैं। मणिधारी जिनचन्द्रसूरि जी के चरण 11.5 इंच लम्बे एवं 7 इंच चौड़े हैं। अकबर प्रतिबोधक जिनचन्द्रसूरि जी के चरण 12 इंच लम्बे और 6 इंच चौड़े हैं।

इस जिन मंदिर में परमात्मा आदिनाथ भगवान की चरण पादुका, दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की चरण पादुका तथा शासन माता चक्रेश्वरी आदि अधिष्ठायक देवी, देव की प्रतिष्ठा वि.सं. 2012 वैशाख सुदि 10 रविवार ता. 1 मई 1955 को अट्ठाई महोत्सव के साथ संपन्न हुई थी। यह प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब (तत्कालीन मुनि) के करकमलों द्वारा हुई थी।

मंदिर जी की भमती में की गयी कारीगरी एवं बनावट अति आकर्षक है। ऐसे प्राचीन स्थल पर, जिसका 40 वर्ष पूर्व जीर्णोद्धार हुआ और जहाँ दादा गुरु की 150 वर्ष प्राचीन चरण पादुका है, वहाँ जगह-जगह से भक्तगण इकट्ठे होकर प्रभु भक्ति का लाभ लेते हैं। हर पूर्णिमा-अमावस्या को महिला मंडल द्वारा दादा गुरुदेव पूजन होता है।

मंदिर जी का नज़दीकी रेलवे स्टेशन काचीगुडा 1.5 कि.मी., बस स्टैण्ड एम.जी. बस स्टैण्ड 1.5 कि.मी. की दूरी पर है। हवाई अड्डा 22 कि.मी. दूर है।

पता : **श्री कोठी जैन श्वेताम्बर अजितनाथ-पारसनाथ मंदिर,**
सुल्तान बाजार, कोठी, हैदराबाद - 500 095 (दूरभाष : 040-5534 5544, 2475 7426)

सोलह सतियाँ
कथानक
19

विलक्षण वैराग्यवती महासती पुष्पचुला

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

(गतांक से आगे)

पुष्पचूला और पुष्पचूल हमउम्र सखाओं के साथ क्रीड़ांगन में उपस्थित थे। आँख मिचौली के खेल में आज उन्हें बड़ा ही रस आ रहा था पर अचानक उनके आनंद के शीशे पर जैसे दु:ख के वज्र का प्रहार हुआ और खुशियों के कांच टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़े।

हुआ यों कि आँख मिचौली के खेल में ध्यान नहीं रहा और पुष्पचूला के पाँव में एक तीक्ष्ण कांटा चुभ गया। यद्यपि वह सर्वदा पदस्त्राण धारण करके ही क्रीड़ांगन में उपस्थित होती थी पर आज जल्दबाजी में नग्न पाँव ही पहुँची थी।

राजकुमारी के पाँव में काँटें का चुभना अपने आप में एक आश्चर्य तो नहीं था पर अघटित प्रसंग जरूर था।

प्रिय भगिनी के मुख से चीत्कार सुनकर पुष्पचूल नंगे पाँव दौड़ आया। सारे सखा इर्द-गिर्द खड़े हो गये। पुष्पचूल के हृदय में पीड़ा का पार नहीं था।

कोमलांगी भगिनी का दु:ख उससे देखा नहीं जा रहा था। शीघ्र ही वैद्योपचार किया गया। शल्योद्धार से ज्योंहि खून का फव्वारा फूट पड़ा, त्योंहि पुष्पचूल की आँखों से आँसूओं की धारा बह चली।

पुष्पचूला और पूष्पचूल यानि कि दो तन और एक मन। दो हृदय और एक विचार। फूल से यदि खुश्बू अलग हो....नदियाँ से यदि धारा अलग हो तो पुष्पचूल और पुष्पचूला एक दूसरे से अलग हो।

एक की आँख से आँसू निकलते तो दूसरे का दिल रोता। एक को चोट लगती तो दूसरे को दर्द होता।

ये दोनों पुत्र व पुत्री थे पुष्पभद्र नगर के राजा पुष्पकेतु एवं महारानी पुष्पावती के। इन दोनों पर राजा-रानी का अथाह प्रेम था।

एकदा चारों उद्यान में उपस्थित थे। पुष्पचूला ने पूछा- पिताश्री! आपकी आँखों की चमक कुछ दिनों से फीकी फीकी नजर आ रही है। क्या आपको कोई चिन्ता सता रही है?

हाँ पुत्री ! चिन्ता तो है ही। यूं तो राज्य में कहीं कोई आतंक का वातावरण नहीं है, न शत्रु का भय है। धरती भी अन्नदेवी बनकर भरपूर अन्नदान कर रही है। यशोपताका चारों दिशाओं में लहरा रही है। सोच रहा हूँ कि तेरी उम्र अब यौवन में प्रविष्ट हो चुकी है। तेरे हाथ कैसे पीले करूँ, यही मेरी चिन्ता का कारण है।

पुष्पचूला सविस्मित हो बोली-पिताजी! आप ये क्या कह रहे हैं? मुझे डोली में बिठाने का अर्थ है-हृदय को धड़कन से अलग कर लेना। क्या आपने मुझमें और भैया पुष्पचूल में प्रकृति प्रदत्त भेद के अतिरिक्त कोई अन्तर देखा है?

पुष्पावती बीच में मुखर हुई- पुष्पे! तूं सच कह रही है। तुम दोनों जन्मना अभिन्न रहे हो। स्तनपान करना, हँसना-रोना, खाना-पीना, सोना-जागना, तुम दोनों की हर प्रवृत्ति एक नदी की दो धारा के रूप में देखी है। यहाँ तक कि भूल से अथवा लाड दुलार के लिये कोई तुम दोनों को अलग कर लेता तो तुम दोनों रो-रोकर आकाश-पाताल एक कर देते।

वस्तुत: तेरे पिताजी को चिन्ता वर-वरण की नहीं, तुम दोनों को अलग-अलग कैसे करूँ, इसी संदर्भ में है।

तो फिर आप हमें क्यों अलग कर रहे हैं। आप जानते हैं कि चाँद से चाँदनी अलग हो तो पुष्पचूल से पुष्पचूला अलग हो! हम चाहते हैं कि हम ता-जिन्दगी इसी प्रकार स्नेह के धागे में बंधे रहे।

पुष्पकेतु पुन: मुखर हुए- पर मेरे लाडलों! समाज

के कुछ आदर्श, नियम और मर्यादाएँ होती हैं। विवाह के बिना जीवन-निर्वाह शक्य नहीं है। यौवन की तरंगें युवानी के समन्दर में उठे बिना नहीं रहती। पुष्पावती बोली-हाँ बेटी! तेरे पिताजी ठीक कह रहे हैं।

पुष्पचूला बोली- पिताश्री! दो दशक जितने दीर्घकाल से आप हमारे जीवन को देख रहे हैं। फिर भी आज अनजान बन रहे हैं। क्या हमारी नि:स्वार्थ प्रीति से आप अनभिज्ञ हैं? हम दोनों एक दूसरे के सहारे एक तो क्या हजार जिन्दगियाँ बीताने को तैयार है पर एक-दूसरे से जुदा होकर हम एक वर्ष... एक महिना... एक घटिका तो क्या एक पल भी जीने के लिये तैयार नहीं है।

हाँ! पिताजी ! हमको अलग करने की बात आप सपने में भी मत सोचना। नहीं तो विरहाग्नि में जल-जलकर हम प्राण छोड़ देंगे। पुष्पचूल ने पुष्पचूला के स्वर में अपने स्वर मिला दिये।

इतने में मित्रों की टोली सामने थी-चलो! चलो! खेलने का समय हो गया है। पुष्पचूला और पुष्पचूल क्रीडांगन की ओर बढ़ गये।

हाथ से हाथ मिलाकर जाती भाई-बहिन की अपूर्व जोड़ी को देखकर पुष्पावती बोली-राजन्! कितना प्रेम है इन दोनों में। निश्चय ही पिछले अनेक जन्मों की परस्पर प्रीति को वर्धमान करते हुए हमारे गृहाँगन को महकाने आये हैं।

इनकी प्रीति आश्चर्यकारी है। इसमें न स्वार्थ की दुर्गंध है, न लोभ की आकांक्षा। एक दूसरे के सुख-दु:ख में सुखी-दु:खी रहने वाले इन दोनों की जिन्दगी उस विरक्त योगिनी के समान है, जिसके हृदय में काम-विकार पैदा नहीं होता। महलों में भी वनवासी जैसा संन्यासी जीवन जी रहे हैं। धन्य है इनकी निर्विकार जीवन शैली को।

राजा के समक्ष एक भारी समस्या थी-पुष्पचूल और पुष्पचूला का विवाह किस प्रकार सम्पन्न करें। उन्हें अलग करना सम्भव नहीं है तो अविवाहित रखना भी उचित नहीं है।

राजा के मन में आया-क्यों न इन दोनों का परस्पर विवाह कर दिया जाये। यह बात रानी के समक्ष प्रस्तुत की तो रानी आश्चर्यपूर्वक बोली-हृदयनाथ! आप ये क्या सोच रहे हैं? भाई-बहिन के पवित्र बन्धन को विवाह के धरातल पर खड़ा करना न केवल धर्म की दृष्टि से अनुचित है अपितु व्यवहारिक तौर पर भी सर्वथा हेय है। क्या आप प्रजाजनों की प्रक्रिया को झेल पायेंगे? यदि विद्रोह के स्वर बुलन्द हुए तो क्या करेंगे? सोच के गवाक्ष से भविष्य की ओर झांकती हुई पुष्पावती बोली।

यदि प्रजा का समर्थन प्राप्त हो गया तो? राजा बोले। रानी मौन थी और मौन में अस्वीकृति झलक रही थी।

पूरे शहर में उद्घोषणा हो गयी कि समस्त प्रजाजनों को राजा ने सभा में विशिष्ट कारण से आमंत्रित किया है।

विशाल जनसभा का प्रांगण राजा के आने से पहले भर चुका था। पुष्पभद्र नगर की यह अपने आप में विशिष्टता कहे या आपसी प्रेम और समर्पण कहे, अपने आप में एक मिशाल थी। प्रजा राजा में भगवान को देखती थी और राजा प्रजा में माता-पिता की आदर्श छवि देखता था।

सभा को सम्बोधित करते हुए पुष्पकेतु बोले-मेरे प्रिय प्रजाजनों! आज का यह हार्दिक आमंत्रण किसी विशेष प्रश्न को लेकर दिया गया है। मैं आपको एक प्रश्न करूँगा, आपको उसका सही-सही जवाब देना है। सहमति प्राप्त करने के लिये राजा ने कहा-क्या आप मेरे प्रश्न का उचित उत्तर देंगे?

चारों ओर से एक ही आवाज आयी-राजन् ! आपके प्रश्न का हम सही-सही उत्तर देंगे।

राजा ने पूछा-इस राज्य की हर चीज पर अधिकार किसका है?

आपका, राजन् ! आपका ।

तो क्या मैं उसका मनचाहा उपयोग कर सकता हूँ?

निस्संकोच कर सकते हैं। इसमें पूछने जैसी बात ही क्या है? (क्रमश:)

गोत्र का इतिहास
27

पीतलिया/पीथलिया एवं डागा गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

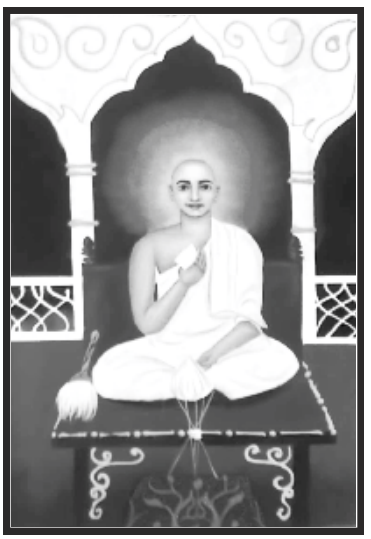

इस गोत्र की स्थापना विक्रमपुर में हुई थी। विक्रम संवत् 1997 की घटना है। प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि विहार कर विक्रमपुर पधारे थे। इस नगर में महामारी फैली हुई थी। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि ने तत्काल एक चमत्कारी मंत्र-गुंफित स्तोत्र की रचना की। घर-घर उस स्तोत्र का पाठ होने लगा, परिणाम स्वरूप महामारी की विदाई हो गई।

उस समय यहाँ रहते थे सोनगरा राजपूत ठाकुर हरिसेन, जो सपरिवार दादा गुरुदेव के पास उनके दर्शन करने आया करते थे। उन्होंने महामारी-नाश का जो चमत्कार देखा तो स्वाभाविक रूप से प्रभावित हुए। वे प्रतिदिन पूज्यश्री के प्रवचन श्रवण करने आने लगे। उन्होंने आचार्यश्री के उपदेशों से जिनधर्म का स्वरूप जाना। वे बोध को प्राप्त हुए। दादा गुरुदेव ने उनके सिर पर वासचूर्ण डाल कर जैन बनाया।

उनके साथ वहाँ रहते थे परमार वंश के पीथलजी! उन्होंने भी दादा गुरुदेव से सम्यक्त्व प्राप्त कर जिन धर्म को स्वीकार किया। श्री पीथलजी के वंशज पीथलिया/पीतलिया कहलाये।

डागा गोत्र का इतिहास

डागा गोत्र के संबंध में दो इतिहास-कथाऐं प्राप्त होती है। माहेश्वरी जाति से भी डागा गोत्र की स्थापना हुई है तथा चौहान राजपूतों से भी!

माहेश्वरी से जो डागा बने, उन्हें प्रथम दादा गुरुदेव ने जैन बनाकर गोत्र दिया था। जबकि चौहान राजपूतों से जो डागा बने, उन्हें तीसरे दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि ने जैन बनाया था।

मूंदडा माहेश्वरी के डागा जाति परिवार को प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि ने प्रतिबोध देकर उन्हें जैन धर्म में दीक्षित किया। तथा डागा गोत्र देकर ओसवालों में सम्मिलित किया। यह घटना बारहवीं शताब्दी की है।

चौहान राजपूत से डागा गोत्र- यह घटना विक्रम संवत् 1381 की है। गोडवाड के नाडोल गांव में चौहान राजपूत श्री डूंगरसिंहजी रहते थे। दिल्ली के बादशाह का एक कारकून जिसका नाम खांन सुलतान था। उसके द्वारा गंभीर अपराध करने के कारण श्री डूंगरसिंहजी ने उन्हें मृत्यु दण्ड दे दिया। परिणाम स्वरूप बादशाह क्रोध में आ गया। उसने डूंगरसिंहजी को गिरफ्तार करने के लिये सेना भेजी।

इस बात की भनक जब डूंगरसिंहजी को लगी, वे घबराकर वहाँ बिराजमान दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की शरण में पहुँचे। गुरुदेव ने उन्हें वीतराग परमात्मा के शुद्ध धर्म का उपदेश दिया। डूंगरसिंहजी ने कहा- गुरुदेव! सबसे पहले मुझे बादशाह से बचाओ।

गुरुदेव ने अपने परम भक्त भैरव का स्मरण किया और बादशाह से डूंगरसिंहजी को बचाने का आदेश दिया। भैरव ने रात को दिल्ली जाकर अपने महल में सोते हुए ादशाह को पलंग समेत उठाकर गुरुदेव के उपाश्रय में ले आया।

गुरुदेव के पास में ही भयभीत श्री डूंगरसिंहजी बैठे हुए थे। उनके सामने जब सोते हुए बादशाह का पलंग आया। तो अचरज से भर उठे। यह चमत्कार देखकर उन्होंने गुरुदेव के चरण पकड लिये।

(शेष पृष्ठ 24 पर)

गुरु स्मृति
71

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

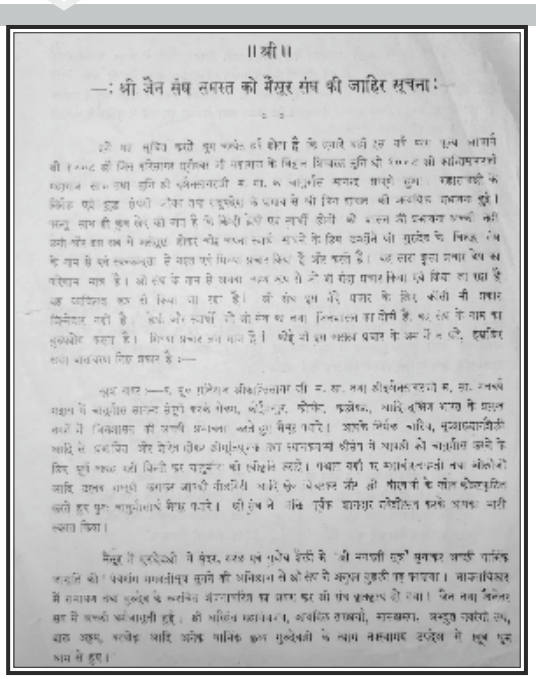

॥ श्री ॥

—: श्री जैन संघ समस्त को मैसूर संघ की जाहिर सूचना :

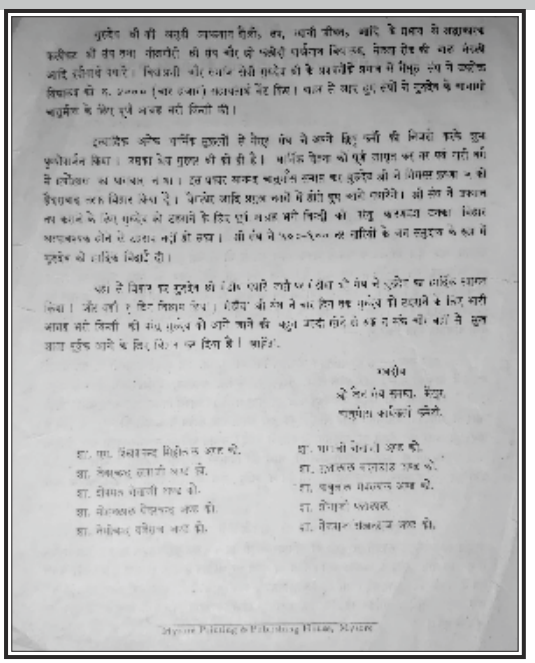

पूज्यश्री ने उदास मन से मैसूर घटना का विवरण सुनाया था। मैसूर का चातुर्मास अद्‌भुत शासन प्रभावना के साथ चल रहा था। पूज्यश्री के क्रान्तिकारी प्रवचनों में जैन-अजैन बडी संख्या में सम्मिलित होते थे।

कुछ व्यक्तियों को ऐसा शानदार वातावरण पसन्द नहीं आ रहा था। इसका कारण था- हृदय में भरा हुआ गच्छवाद! साम्प्रदायिक विद्वेष ने साम्प्रदायिक सौहार्द्रता को खत्म करने का बीडा उठाया।

उन लोगों ने उस व्यक्ति को तैयार किया। वह व्यक्ति जो चातुर्मास से पूर्व पूज्यश्री के विहार में 10 दिन साथ था। वह व्यक्ति प्रलोभन में आ गया। उसे पट्‌टी पढाई गई। उस व्यक्ति ने पूज्यश्री के बारे में अनुचित बातें की। लोगों को भरोसा नहीं हुआ। समूचे वातावरण की खोज की गई। श्रीसंघ के आगेवानों को आरोपों में रत्ती भर भी सच्चाई प्रतीत नहीं हुई। उन्होंने उस व्यक्ति को कडकाई से पूछकर सच बताने का कहा।

वह व्यक्ति घबरा उठा। उसने सारी सच्चाई प्रकट कर दी। आखिर श्रीसंघ ने एक परिपत्र प्रकाशित कर सकल श्री संघ को सारी सच्चाई से सूचित किया।

मैसूर श्री संघ व आगेवान श्रावकों के हस्ताक्षरों से जो परिपत्र जारी किया, उसमें श्रीसंघ की ओर से स्पष्ट किया गया कि यह सब द्वेषी व्यक्तियों का परिणाम था।

उस परिपत्र का विवरण जानने जैसा है-

श्री जैन संघ समस्त को मैसूर संघ की जाहिर सूचना

हमें यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि हमारे यहाँ इस वर्ष परम पूज्य आचार्य श्री 1008 श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी महाराज के विद्वान् शिष्यरत्न मुनि श्री 1008 श्री कान्तिसागरजी महाराज सा. तथा मुनि श्री दर्शनसागरजी म.सा. का चातुर्मास सानन्द संपूर्ण हुआ। महाराजश्री के निर्मल एवं शुद्ध संयमी जीवन तथा सदुपदेश के प्रचार से श्री जिनशासन की अत्यधिक प्रभावना हुई। परन्तु

(शेष पृष्ठ 30 पर)

विहार डायरी 120

विहार डायरी

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

नंदुरबार प्रतिष्ठा के लिये हमारा विहार चल रहा था। डभोई से नर्मदा नदी के कुछ ही समय पहले बने पुल को पारकर हम राजपीपला पहुँचे थे। बीच में थोडा रास्ता सही नहीं था। राजपीपला के श्रावक सेवा भक्ति में तत्पर थे। राजपीपला से पूर्व का हमारा रात्रि प्रवास राजपीपला संघ के आगेवान श्रावक श्री किरीटभाई शाह के फार्म हाउस पर था। राजपीपला में सिवाना का ओस्तवाल परिवार मिला। वे काफी समय से यहाँ व्यापार आदि हेतु से निवास करते हैं। अपने ही क्षेत्र के श्रावकों को पाकर प्रसन्नता होना स्वाभाविक था। जिनमंदिर में परमात्मा के दर्शन कर मन हर्षित हुआ था।

राजपीपला से शाम को विहार किया था। लगभग 10 किलोमीटर पर स्थित विद्यालय में रुकना हुआ था। यहाँ से सेलंबा तक पूरा जंगल का रास्ता था। सुबह विहार करते समय जंगल के उस मनोरम वातावरण का अनुभव करते हुए एक अनूठी अनुभूति हो रही थी। लगभग तीन से चार दिनों का यह रास्ता था। वाहनों का आना जाना नहिंवत् था। प्रदूषण का सर्वथा अभाव! पूरी सडक पर दांयें बांयें चलते हुए ऐसे विहार हो रहा था, जैसे यह सडक न होकर घर का गलियारा हो।

सेलंबा, खापर, अक्कलकुआ के श्रावक लोगों का निरन्तर आवागमन हो रहा था। वे विहार में पूरी व्यवस्था व्यवस्थित रूप से देख रहे थे। खानदेश में हमारा विचरण पहली बार हो रहा था। पूज्य गुरुदेवश्री का विचरण इस क्षेत्र में काफी हुआ था। खानदेश के खेतिया नगर में उनका चातुर्मास भी हुआ था। इस क्षेत्र में जिन मंदिरों के निर्माण की प्रेरणा उस समय पूज्य गुरुदेवश्री ने दी थी। तलोदा व खेतिया जिन मंदिरों का निर्माण आपकी ही प्रेरणा का परिणाम था।

श्री अजितनाथ भगवान, नंदुरबार

हम डेडियापाडा, सेलंबा होते हुए खापर पहुँचे थे। नंदुरबार प्रतिष्ठा का जब निर्णय हुआ था, तब पालीताना में खापर का संघ भी पहुँचा था। यहाँ नई दादावाडी का निर्माण हुआ था। उसकी प्रतिष्ठा की विनंती लेकर वे पधारे थे। उन्हें ता. 7 मई 2003 का मुहूर्त्त दिया था, जबकि नंदुरबार की प्रतिष्ठा 21 मई 2003 को होनी थी। अभी अप्रेल प्रारंभ हुआ था। खापर की प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् नंदुरबार जाकर प्रतिष्ठा करा सकते थे। पर नंदुरबार में जाजम का मुहूर्त्त पहले था। उसमें निश्रा प्रदान करने का संघ का व साध्वीजी म. का अतीव आग्रह था। दादावाडी का पूरा अवलोकन भी करना था ताकि कोई बदलाव करना पडे तो किया जा सके।

इस कारण ऐसा ही तय किया गया कि खापर, अक्कलकुआं, वाण्याविहीर होकर सीधे नंदुरबार की ओर विहार हो। वहाँ जाजम के मुहूर्त्त के पश्चात् बलसाणा तीर्थ

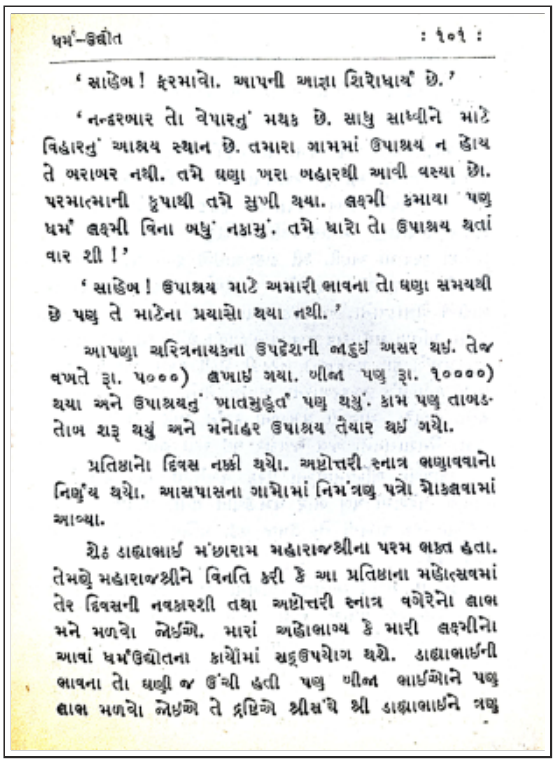

धर्म-उद्योत : १०१ :

'સાહેબ! ફરમાવો. આપની આજ્ઞા શિરોધાર્ય છે.'

'નન્દરબાર તો વેપારનું મથક છે. સાધુ સાધ્વીને માટે વિહારનું આશ્રય સ્થાન છે. તમારા ગામમાં ઉપાશ્રય ન હોય તે બરાબર નથી. તમે ઘણા ખરા બહારથી આવી વસ્યા છો. પરમાત્માની કૃપાથી તમે સુખી થયા. લક્ષ્મી કમાયા પણ ધર્મ લક્ષ્મી વિના બધું નકામું. તમે ધારો તો ઉપાશ્રય થતાં વાર શી!'

'સાહેબ! ઉપાશ્રય માટે અમારી ભાવના તો ઘણા સમયથી છે પણ તે માટેના પ્રયાસો થયા નથી.'

આપણા ચરિત્રનાયકના ઉપદેશની જાદુઈ અસર થઈ. તેજ વખતે રૂા. ૫૦૦૦) લખાઈ ગયા. બીજા પણ રૂા. ૧૦૦૦૦) થયા અને ઉપાશ્રયનું ખાતમુહૂર્ત પણ થયું. કામ પણ તાબડતોબ શરૂ થયું અને મનોહર ઉપાશ્રય તૈયાર થઈ ગયો.

પ્રતિષ્ઠાનો દિવસ નક્કી થયો. અષ્ટોત્તરી સ્નાત્ર ભણાવવાનો નિર્ણય થયો. આસપાસના ગામોમાં નિમંત્રણ પત્રો મોકલવામાં આવ્યા.

શેઠ ડાહ્યાભાઈ મંછારામ મહારાજશ્રીના પરમ ભક્ત હતા. તેમણે મહારાજશ્રીને વિનતિ કરી કે આ પ્રતિષ્ઠાના મહોત્સવમાં તેર દિવસની નવકારશી તથા અષ્ટોત્તરી સ્નાત્ર વગેરેનો લાભ મને મળવો જોઈએ. મારાં અહોભાગ્ય કે મારી લક્ષ્મીનો આવાં ધર્મઉદ્યોતના કાર્યોમાં સદ્‌ઉપયોગ થશે. ડાહ્યાભાઈની ભાવના તો ઘણી જ ઉંચી હતી પણ બીજા ભાઈઓને પણ લાભ મળવો જોઈએ તે દૃષ્ટિએ શ્રીસંઘે શ્રી ડાહ્યાભાઈને ત્રણ

: ૧૦૨ : જિનઋદ્ધિસૂરિ જીવન-પ્રભા

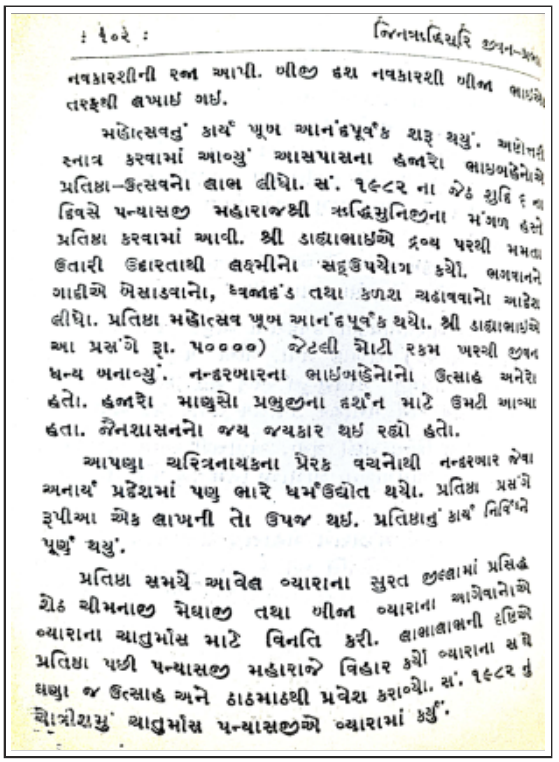

નવકારશીની રજા આપી. બીજી દશ નવકારશી બીજા ભાઈઓ તરફથી લખાઈ ગઈ.

મહોત્સવનું કાર્ય ખૂબ આનંદપૂર્વક શરૂ થયું. અષ્ટોત્તરી સ્નાત્ર કરવામાં આવ્યું. આસપાસના હજારો ભાઈબહેનોએ પ્રતિષ્ઠા-ઉત્સવનો લાભ લીધો. સં. ૧૯૮૨ ના જેઠ સુદિ ૬ ના દિવસે પન્યાસજી મહારાજશ્રી ઋદ્ધિમુનિજીના મંગળ હસ્તે પ્રતિષ્ઠા કરવામાં આવી. શ્રી ડાહ્યાભાઈએ દ્રવ્ય પરથી મમતા ઉતારી ઉદારતાથી લક્ષ્મીનો સદ્‌ઉપયોગ કર્યો. ભગવાનને ગાદીએ બેસાડવાનો, ધ્વજાદંડ તથા કળશ ચઢાવવાનો આદેશ લીધો. પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ ખૂબ આનંદપૂર્વક થયો. શ્રી ડાહ્યાભાઈએ આ પ્રસંગે રૂા. ૫૦૦૦૦) જેટલી મોટી રકમ ખરચી જીવન ધન્ય બનાવ્યું. નન્દરબારના ભાઈબહેનોનો ઉત્સાહ અનેરો હતો. હજારો માણસો પ્રભુજીના દર્શન માટે ઉમટી આવ્યા હતા. જૈનશાસનનો જય જયકાર થઈ રહ્યો હતો.

આપણા ચરિત્રનાયકના પ્રેરક વચનોથી નન્દરબાર જેવા અનાર્ય પ્રદેશમાં પણ ભારે ધર્મઉદ્યોત થયો. પ્રતિષ્ઠા પ્રસંગે રૂપીઆ એક લાખની તો ઉપજ થઈ. પ્રતિષ્ઠાનું કાર્ય નિર્વિઘ્ને પૂર્ણ થયું.

પ્રતિષ્ઠા સમયે આવેલ વ્યારાના સુરત જીલ્લામાં પ્રસિદ્ધ શેઠ ચીમનાજી મેઘાજી તથા બીજા વ્યારાના આગેવાનોએ વ્યારાના ચાતુર્માસ માટે વિનતિ કરી. લાભાલાભની દૃષ્ટિએ પ્રતિષ્ઠા પછી પન્યાસજી મહારાજે વિહાર કર્યો વ્યારાના સંઘે ઘણા જ ઉત્સાહ અને ઠાઠમાઠથી પ્રવેશ કરાવ્યો. સં. ૧૯૮૨ નું ચોત્રીશમું ચાતુર્માસ પન્યાસજીએ વ્યારામાં કર્યું.

की यात्रा करके दोंडाइचा, सारंगखेडा, शहादा, खेतिया, तलोदा होते हुए खापर पहुँचना और प्रतिष्ठा करवाना।

खापर की विशाल दादावाडी का अवलोकन किया। नीचे उपाश्रय था। उपर दादावाडी का निर्माण करवाया गया था। सेलंबा से लेकर खापर, अक्कलकुआं, वाण्याविहिर आदि क्षेत्रों के श्रावकों का परिचय था। श्री नेमीचंदजी भंसाली जो खापर निवासी थे, उनका पालीताना काफी आना-जाना था। हाँलाकि वे दिवंगत हो गये थे, पर उनका परिवार सेवा में उपस्थित था। वे मेरे शिष्य मुनि मनीषप्रभ के सांसारिक बडे पिताजी थे।

खानदेश के इन क्षेत्रों में प्रायः खरतरगच्छ-अनुयायी परिवार हैं। उनकी धर्म-प्रीति व संघ-निष्ठा का अनुभव कर हृदय प्रमुदित हुआ था। चूंकि हमारा इस क्षेत्र में प्रवास प्रथम बार हो रहा था, इस कारण इनका उत्साह अपार था। दिनभर उपाश्रय भरा रहता।

ता. 11 अप्रेल को हम नंदुरबार पहुँचे थे। इस बीच विहार में साथ रहकर नंदुरबार के श्री चंदनमलजी श्रीश्रीमाल ने सेवा का पूरा लाभ लिया था।

साध्वीवर्या श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा नंदुरबार ही थे। उनकी प्रेरणा से ही जिन मंदिर दादावाडी का निर्माण हुआ था। नंदुरबार में मारवाडी, गुजराती लोग बडी संख्या में रहते हैं। गांव के श्री अजितनाथ मंदिर के दर्शन किये।

मैं पिछले दिनों खरतरगच्छ विभूषण श्री मोहनलालजी म. के समुदाय के पंन्यास श्री ऋद्धिमुनिजी म.सा. का जीवन चरित्र पढ रहा था। उनकी प्रेरणा व निश्रा में हुए शासन प्रभावना के अनूठे कार्यो का विवरण पढकर अभिभूत था। उसमें नंदुरबार का वर्णन पढा तो चकित हो गया कि यहाँ के प्राचीन इस अजितनाथ परमात्मा के विशाल मंदिर की प्रतिष्ठा उन्हीं के करकमलों से संपन्न हुई थी। उपाश्रय एवं प्रतिष्ठा का पूरा विवरण इस प्रकार है-

व्याराथी नंदरबारनो रस्तो घणोज खराब होवाथी पन्यासजी महाराजने विहारमां भारे तकलीफ थइ। परिश्रम पण घणो पड्यो। पगे सोजा आवी गया। नंदरबारमां शेठ डाह्याभाई मंछारामना जीनमां पधार्या। ताव पण आवी गयो। यात्राना प्रारंभमां ज विघ्न आव्युं। कोई जैन मुनि महाराज पोताना जिनमां घर आंगणे पधार्या छे तेम सांभली शेठ

डाह्याभाई महाराजश्रीना दर्शने आव्या।

पंन्यासजी महाराजने जोइने तेओ तो खूब हर्षित थया। पोताने जैन धर्मना उत्तम सिद्धांतोनी ओलखाण करावी पोताने तथा पोताना आखा कुटुंब ने सन्मार्गे चढावनार, पोताना परोपकारी गुरु महाराज पंन्यासजी श्री ऋद्धिमुनिजीने जोइने खूब प्रसन्न थया। औषधनी तुरत व्यवस्था करवामां आवी, सेवाभक्तिनो पण लाभ लीधो अने पोताने आंगणे पोतानाज धर्मगुरु एकाएक आवी मल्या ते पोताना अहो भाग्य है, तेम मानवा लाग्या।

श्री अजितनाथ मन्दिर एवं उपाश्रय, नंदुरबार

❀❀❀

भाग्यवानो! मारा स्वास्थ्य माटे तो हुं हमणां अहीं छुं, पण मारी एक भावना छे।

'साहेब! फरमावो। आपनी आज्ञा शिरोधार्य छे'।

'नंदरबार तो वेपारनुं मथक छे। साधु साध्वीने माटे विहारनुं आश्रय स्थान छे। तमारा गाममां उपाश्रय न होय ते बराबर नथी। तमे घणा खरा बहारथी आवी वस्या छो। परमात्मानी कृपाथी तमे सुखी थया। लक्ष्मी कमाया पण धर्म लक्ष्मी विना बधुं नकामुं। तमे धारो तो उपाश्रय थतां वार शी!'

'साहेब! उपाश्रय माटे अमारी भावना तो घणा समयथी छे पण ते माटेना प्रयासो थया नथी।'

आपणा चरित्रनायकना उपदेशनी जादुइ असर थइ। तेज वखते रू. 5000 रू. लखाइ गया। बीजा पण रू. 10000 था। अने उपाश्रयनुं खातमुहूर्त्त पण थयुं। काम पण ताबडतोब शरूं थयुं अने मनोहर उपाश्रय तैयार थइ गयो।

शेठ डाह्याभाई मंछाराम महाराजश्री ना परम भक्त हता। तेमणे महाराजश्रीने विनति करी के आ प्रतिष्ठाना महोत्सवमां तेर दिवसनी नवकारशी तथा अष्टोत्तरी स्नात्र वगेरेनो लाभ मने मलवो जोइए।

❀❀❀

डाह्याभाइनी भावना तो घणी ज उंची हती पण बीजा भाईओने पण लाभ मलवो जोइए ते द्रष्टिए श्रीसंघे श्री डाह्याभाईने पण नवकारशी नी रजा आपी।

❀❀❀

सं. 1982 ना जेठ सुदि 6 ना प्रतिष्ठा करवामां आवी। श्री डाह्याभाईए आ प्रसंगे रू. 50,000 रू. जेटली मोटी रकम खरची जीवन धन्य बनाव्युं।

आपणा चरित्रनायकना प्रेरक वचनोथी नन्दरबार जेवा अनार्य प्रदेशमां पण भारे धर्म उद्योत थयो। प्रतिष्ठा प्रसंगे रूपीया एक लाखनी तो उपज थइ। प्रतिष्ठानुं कार्य निर्विघ्ने पूर्ण थयुं।

इस विवरण से अत्यन्त स्पष्ट है कि नंदुरबार की प्रतिष्ठा खरतरगच्छ के पूज्य पंन्यास प्रवर श्री ऋद्धिमुनिजी म. के करकमलों से संपन्न हुई थी तथा उपाश्रय का निर्माण भी पूज्य पंन्यासजी की प्रेरणा से ही संपन्न हुआ था। (क्रमशः)

धारावाहिक
कथा
16

अधूरा सपना

प्रमोदगुरु चरणरज डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

(गतांक से आगे)

महाराजा विमलयश जब अंत:पुर में पहुँचे तब तक अंत:पुर में यह समाचार प्रचारित हो चुका था कि युवराज को राज्य से निष्कासन की सजा मिली है। महारानी को सजा का अंदेशा तो था पर सजा का स्वरूप इतना खतरनाक होगा, यह पता नहीं था। उसका तो रोम-रोम जैसे रो रहा था। वह कैसे रहेगी अपने अंगजात के अभाव में? वह सोच रही थी कि जिसके अभाव की वह कल्पना भी नहीं कर सकती, उसे सदा-सदा के लिये अपनी जिन्दगी से अलग करना कितना दुष्कर है!

इतने में एक परिचारिका ने आकर निवेदन किया कि युवरानी एवं राजकुमारी आपके दर्शन की आज्ञा चाहती हैं। महारानी ने संकेत से स्वीकृति दी। युवरानी ने जब राजकुमारी के साथ महारानी के कक्ष में कदम रखा, तब तक महारानी स्वयं को संतुलित कर चुकी थी।

युवरानी ने चरण स्पर्श करके निवेदन किया- मां! पतिव्रता नारी की मर्यादा आपसे अधिक कौन समझेगा? मेरी प्रार्थना है कि जहाँ आपके पुत्र रहेंगे, वहीं आपकी यह कुलवधु रहेगी। इतने में राजकुमारी बोल पड़ी- मां! मैं भी भैया-भाभी के साथ रहूंगी।

तीनों का संवाद चल ही रहा था कि कक्ष में महाराजा का पदार्पण हो गया। महाराज को आया हुआ देखकर ननद-भाभी दोनों चुपके से हट गयी।

महाराजा विमलयश ने महारानी की आँखों में झांका। महारानी ने महाराजा को ज्योंहि देखा, आँखें बरस पड़ी। उसने रोते हुए कहा- यह क्या हुआ? इकलौते पुत्र के अभाव में हमारा जीवन कितना डरावना होगा, आपने उसकी कल्पना भी नहीं की होगी। स्वामी! क्या हम इतने अभागे हैं कि अपने ही पुत्र को इतनी भयानक सजा देने की स्थिति आ गयी? आपने इतनी कठोर सजा क्यों दी? क्या आप नहीं जानते कि अब वह एकाकी नहीं है। वह युवरानी को लेकर कहाँ-कहाँ भटकेगा? मैं इन महलों में कैसे जी पाऊँगी?

देवी! क्या मैं दु:खी नहीं हूँ? जब मेरा भी कलेजा छलनी-छलनी हो रहा है तो तुम तो मां हो। हमें तो जीते जी मौत की सजा हो गयी है। हमने कितनी तपश्चर्या की थी, तब कहीं जाकर बेटा पाया था। आज उसी बेटे को सजा देते समय हृदय कितना तार-तार हुआ होगा? परंतु क्या करूं? जिसके मस्तक पर एक साथ पिता व राजा की जवाबदारी का बोझ हो, उसके हृदय का दर्द शायद किसी भी शब्द में अभिव्यक्त नहीं हो सकता। इस संसार में अभी किसी भी शब्द में इतना सामर्थ्य नहीं है कि मेरे दर्द को समेट सके कहते-कहते राजा की आवाज भर्रा गयी।

नहीं प्राणेश! वर्षों के सान्निध्य ने मुझे आपके संपूर्ण व्यक्तित्व से परिचित करवाया है। मैं जानती हूँ कि इस समय आपकी मनोवेदना कितनी गहरी होगी? मैं अपनी पीड़ा आपके समक्ष प्रकट कर सकती हूँ पर आप तो पूरा-पूरा जहर भीतर ही पीने को मजबूर हैं। युवराज तो हमारी आँखों से दूर अपनी त्रुटियों के कारण हो रहा है पर इसके साथ-साथ एक और नयी आपदा खड़ी हो रही है। युवरानी और राजकुमारी आपके आगमन से पूर्व यही कहने आये थे कि वे भी युवराज के साथ जायेंगे। यह हमारी खुशियों को कैसी नजर लग गयी है?

क्या कह रही हो देवी! युवरानी और राजकुमारी इसके साथ जायेगी? इसका कोई निश्चित स्थान होता तो हमें कोई चिन्ता नहीं थी। जब इसकी अपनी मंजिल ही अनिश्चित है तो राजकुमारी व युवरानी का भविष्य किसके विश्वास पर आधारित होगा?

मैं क्या कह सकती हूँ स्वामी? आपके निर्णय पर प्रश्नचिह्न लगाना आपके साथ अन्याय होगा? फिर भी ऐसा लगता है कि संसार की अपेक्षा जरूर आपका दण्ड प्रशंसनीय होगा पर परिवार तो पूरा ही अस्त-व्यस्त हो जायेगा।

देवी! मैंने युवराज को बदलने के लिये कितने-कितने प्रयत्न किये! कितने वर्षों तक भीतर ही भीतर सुलग कर

आशा का दामन थामते हुए इंतजार करता रहा कि कभी तो उसे अपना उत्तरदायित्व समझ में आयेगा पर हमारी दी हुई समस्त व्यवस्थाओं की और अधिक धज्जियाँ उड़ाते हुए दिन-प्रतिदिन उद्दंड होता गया। तुम मुझे क्षमा करना प्रिये! मैंने तुम्हें भयानक रूप से दु:खी किया है, कहते-कहते राजा की आवाज दब गयी।

महारानी की आँखें बरसती रही। दोनों की मानसिकता दर्द से छलक रही थी।

राजा ने ही कहा- युवरानी और राजकुमारी को समझाया?

नहीं। उन्होंने अपना निर्णय बताया था। मैं कुछ कहुँ उससे पूर्व ही आप पधार गये। आप कहो तो मैं आपके सामने ही उनसे बात करूँ?

महाराजा ने ताली बजाकर एक सेवक को बुलाया और उनके द्वारा युवरानी और राजकुमारी को अपने पास महल में आने को कहा।

युवरानी एवं राजकुमारी दोनों शायद इसी इंतजार में थी। वे तुरंत ही महाराज के समक्ष प्रस्तुत हो गयी।

महाराजा ने बारी-बारी से दोनों को वात्सल्यभरी निगाहों से निहारा। युवरानी को देखकर अनायास उनकी आँखें भर आयी।

कितने आशाओं के दीप जलाकर यह गृहलक्ष्मी बनकर यहाँ आयी थी। कहाँ कल और कहाँ आज? क्या इस दिन के लिये मैंने इसे अपनी पुत्रवधु बनाया था? नियति ने यह कैसी क्रूर मजाक की है?

कितनी सुकुमार है इसकी काया! यह कैसी विडम्बना है कि एक राजकन्या को शादी की इतनी कठोर सजा मिलने जा रही है। यह शादी की सजा ही तो हुई। इसके अतिरिक्त तो इस मासूम युवरानी का क्या अपराध है? यह रिश्तों की कैसी नियति है कि अपराधी से रिश्ते के कारण निर्दोष होते हुए भी इसे उतनी ही सजा मिलेगी जो अपराधी को मिल रही है।

युवरानी ने सलज्ज अपना चेहरा झुकाये ही रखा। वह अपने ससुर की आज्ञा का इंतजार करने लगी। राजा समझ नहीं रहा था कि वह क्या बोले? उन्हें पुत्री से भी ज्यादा पुत्रवधु से ममता थी। आज शादी के दो साल की अवधि में पुत्रवधु ने सदा राजमर्यादा एवं परिवार के प्रति निष्ठा ही प्रकट की थी। उसका विनय विवेक राजपरिवार के लिये गौरव का कारण बना था। क्या इस देवी के बिना राजमहल जीवंत रहेगा?

महाराजा जितना सोचते उतने ही अधिक अवसाद में डूबते जा रहे थे।

आखिर सुन्दरी ही बोली- पिताजी हम दोनों ने निर्णय किया है कि हम अपने भैया के साथ ही जायेंगे।

महाराजा जानते थे कि युवरानी का निर्णय उचित है। भारतीय नारी अपने पति के साथ ही सुखी होती है। उसका सुख और दु:ख पति से बंधा है। वह स्वतंत्र नहीं है। पति जंगल में खाख छाने तो पत्नी महलों में मिठाईयाँ कैसे खा सकती है?

परंतु क्या युवराज इस फूल को संभाल सकेगा? वह स्वयं जब अपने भविष्य के प्रति निश्चित नहीं है तो अपनी इस युवा एवं संवेदनशील पत्नी को कैसे संभाल पायेगा?

उन्होंने कहा- आज तुम संकोच छोड़कर सुंदरी की तरह ही मुझसे अपनी भावनाएं बांटो। मैं तुम्हारे निर्णय की प्रशंसा करता हूँ। नारी का कर्त्तव्य है कि वह पति की छाया बनकर रहे। क्या तुम आश्वस्त हो कि युवराज तुम्हारी रक्षा कर सकेगा?

हाँ पिताजी! मेरे प्रति वे अत्यंत कोमल हैं। मेरे साथ होने से उनकी जिम्मेदारी बढेगी और यह जिम्मेदारी ही उन्हें विकास की तरफ अग्रसर करेगी। मुझे संपूर्ण विश्वास है कि मैं अपने समर्पण और भक्ति से अवश्य ही उन्हें बदल सकूंगी।

आप मुझे आशीर्वाद दें कि मैं आपके पुत्र का हृदय अपनी सेवा से बदल सकूं।

महाराजा का हृदय बोल पड़ा- तुम्हारी श्रद्धा अवश्य फलीभूत होगी। मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारा पथ प्रशस्त करेगा।

पिताजी मुझे भी आप आशीर्वाद दें कि मैं भी भैया के साथ जाकर भाभी की सहगामिनी बनूं।

महाराजा युवरानी को भेजने में भी हिचकिचा रहे थे तो इकलौती षोडशी बिटिया को भेजने के लिए कैसे स्वीकृति देते?

उन्होंने कहा-बेटी! क्या तुमने हमारा भी विचार किया है? इतने विशाल राजमहल में क्या हमें दो को ही रहना होगा? क्या यह राजसिंहासन आज मेरे लिये इतना घातक हो गया है कि मैं अपनी इस ढलती उम्र में एकाकी हो रहा हूँ, कहते-कहते राजा का इतनी देर से रुका हुआ सब्र का प्याला छलक उठा। (क्रमश:)

कहानी
3

शील तारणहार

—मुनि समयप्रभसागरजी म.

गतांक से आगे...

तेजी से भागता हुआ वह जहाज पर चढ़ गया और वहाँ उपस्थित लोगों और नाविकों के सामने अभिनय करते हुए रोते-रोते कहने लगा- मेरी पत्नी को राक्षस खा गया है। मैं वहाँ से तेजी से भागकर आ गया हूँ। राक्षस अभी इसी तरफ आ रहा है। जल्दी से चलो। भयभीत नागरिकों ने तुरन्त जहाजों को वहाँ से रवाना करने में भलाई समझी। और तुरन्त ही जहाज वहाँ से रवाना कर दिए। अनुकूल हवा के कारण जहाजों ने शीघ्र ही आगे बढ़ना शुरू कर दिया। महेश्वरदत्त मन ही मन अपनी कुटिल चाल को सफल होता देखकर प्रसन्न हुआ। लोक अपवाद से बचकर अपनी दुराचारी पत्नी से पीछा छुडा ऐसा सोचने लगा। जहाज यवनद्वीप पहुँचें। वहाँ व्यापार में उसको अच्छा लाभ हुआ। ढ़ेर सारा धन कमाकर वह अपने नगर चन्द्रपुर पहुँच गया। पूरे परिवार को उसने नर्मदासुन्दरी की मनगढंत कहानी सुनाकर सफलता प्राप्त की। शोकाकुल परिवार ने नर्मदासुन्दरी को राक्षस द्वारा खाया जानकर श्राद्ध कर्म आदि क्रियाएं करवाई गए। थोड़े समय बाद महेश्वरदत्त की दूसरी शादी कर दी गई।

इधर नर्मदासुन्दरी जब नींद से जगी। अपने पति को वहाँ न देखकर व्यथित हो गई। इधर-उधर देखा पर कहीं पर भी पतिदेव दिखाई नहीं दिये। कहीं ऐसा तो नहीं कि मुझे रिझाने के लिए कहीं छिप कर बैठ गये हो। ऐसा सोचकर उसने आवाजें देना शुरू किया पर कोई प्रत्युत्तर न मिला।

अब वह रुदन करने लगी। उसका रुदन सुनकर वहाँ सान्त्वना देने वाला कोई न था। धीरे-धीरे उसका हृदय का विदायक स्वर तेज होने लगा। उसका विलाप वन्य प्राणियों की आंखों को भीगाने लगा। हे नाथ! मुझे एकाकी छोड़कर कहाँ चले गये इस प्रकार रोती हुई विलाप करती हुई आँखों के अश्रुओं से वन के वृक्षों को सिंचती हुई, उष्ण नि:श्वास छोड़ती हुई, इधर-उधर लडखड़ाते कदमों से गिरते-संभलते हुए समुद्रतट पर आ पहुँची। वहाँ जहाजों को न देखकर उसके हृदय में तीव्र वेदना का ज्वार उठा और उस वेदना के तीव्र वेग से मूर्च्छित होकर नर्मदासुन्दरी वहीं गिर पड़ी। कुछ समय बाद ठण्डी हवाओं ने अपने आंचल में लाए पानी से उसकी मूर्च्छा दूर कर दी। सचेत होते ही फिर विलाप करने लगी। विलाप करते-करते सोचने लगी कि अब तो मरण ही शरण है। सागर में कूदकर आत्मघात कर लूँ।

इस घोर निराशा भरे अन्धकार में एक सुविचार रूपी पुण्य की चिन्गारी ने चमत्कृत कर दिया। पूर्व में गुरुभगवंतों के श्रीमुख से सुनी हुई जिनवाणी उसके कर्णपटल से टकराती महसूस हुई। संसार सागर को तरने के लिये ही यह मानव जीवन मिला है। आत्मघात महापाप है। आत्मघात से बालमरण होगा जिससे आत्म का श्रेय नहीं हो सकता है। दु:खों से घबराकर इस जीवन से छूटकारा पा सकते हो पर आगे! कर्म सत्ता तो कहीं भी पीछा छोड़ने वाली नहीं है। पूर्वभवों में किये हुए कर्मों को समता से भोगना ही श्रेयस्कर मार्ग है। विचार बदले, आत्मघात का निर्णय छोड़कर दु:खों को समता भाव से भोगने का निर्णय किया। उसने भिगी हुई मिट्टी से जिनेश्वर परमात्मा की प्रतिमा का निर्माण कर एक वृक्ष के नीचे स्थापित किया। नवकार महामंत्र का जाप करते हुए सुरक्षित रूप से रात्रि व्यतीत की। दु:खों से दबी हुई वह अन्तर मन से प्रार्थना करने लगी। वन में रहे हुए फलों को खाकर अपना जीवन यापन करने लगी। उसके शुभ भावों और आराधना के पवित्र परमाणुओं से वन्यजीव भी उसके सहायक बन गये। वन्य जीवों के बीच भी वह निर्भय होकर आराधना में लीन रहती। शेष समय वन में घूमकर पसार करती।

एक दिन उसके चाचा वीरदास बब्बर कुल की तरफ जाते हुए जल-ईन्धन के लिये राक्षस द्वीप पर रुके। जहाज से नीचे उतरने पर वहाँ समुद्र तट पर घूमती हुई नर्मदासुन्दरी को देखा तो तुरन्त पहचान गए। और तुरन्त नर्मदासुन्दरी के पास पहुँच कर विस्मित होते हुए पूछा- हे पुत्री! तुम यहाँ अकेली कैसे? महीनों बाद नर्मदासुन्दरी ने स्वजन को देखा अपनत्व मिला। अपनत्व की उष्मा को पाकर बर्फ की तरह जमी हुई दु:खों की परतें पिघल कर अश्रुओं के रूप में उसके नयनों से बरसने लगी। चाचा वीरदास ने उसे अपने सीने से लगाकर उसके सिर को सहलाते रहे। दिल का बोझ हल्का होने पर नर्मदासुन्दरी ने घर से निकलने से लेकर आज तक का सारा वृत्तान्त सुनाया। चाचा वीरदास ने उसे आश्वस्त करके अपने साथ लिया और आगे की यात्रा पर चल पड़े। थोड़े ही दिनों बाद वे बब्बर कुल पहुँच गए।

बब्बर का राजा गुण सम्पन्न था। पर एक दोष ने गुणों पर जैसे आवरण डाल दिया था। वह किसी रूपवती कन्या को देखकर स्वयं पर नियन्त्रण नहीं कर पाता था। इस बात का फायदा उठाया था वहाँ की गणिका हरिणी ने। हरिणी ने राजा का दिल जीतकर एक वरदान राजा से ले लिया था कि जो भी नया व्यापारी वहाँ आयेगा। वह एक हजार स्वर्ण मोहरें उसको देने के बाद ही व्यापार कर सकता है।

वीरदास व्यापार के लिये नगर में आया है ऐसा जानकर हरिणी ने अपनी एक दासी को यह सन्देश देने के लिये भेजा कि वह गणिका के आवास में आकर उसके यहाँ हजार स्वर्ण मोहरें वीरदास के घर पहुँचकर दासी ने नर्मदासुन्दरी को देखा तो देखती ही रह गई। उसने अपनी स्वामिनी का संदेश दिया और तुरन्त वापस आ गई। अपने विस्मय को छुपाने में असफल दासी ने नर्मदासुन्दरी के रूप और लावण्य का वर्णन करते हुए कहा- मैंने वीरदास के घर में अप्सरा के गर्व को भी हरने वाली सुन्दरी देखी है। वह अगर हमारे घर में आ जाए तो मानो कल्पवृक्ष आ जायेगा है।

वीरदास एक हजार दीनार लेकर हरिणी के यहाँ पहुँचाने आया। हरिणी ने मधुर वचनों से सत्कार किया। वीरदास को मोहित करके उसके पास से उसके नाम वाली अंगूठी ले ली। वीरदास वहाँ से निकलकर व्यापारिक कार्य से अन्य व्यापारी के वहाँ गया। मौका देखकर हरिणी ने उसी दासी को वीरदास के घर तुरन्त भेजते हुए दासी को समझा दिया कि तुझे जल्दी से उस सुन्दरी को लाना है। वीरदास के घर में दासी ने वीरदास के नाम वाली मुद्रिका दिखा कर कहा-तुम्हारे चाचा ने तुम्हें तुरन्त बुलाने के लिये अपनी अंगूठी देकर मुझे भेजा है इसलिये तुम मेरे साथ तुरन्त चालो। वह चालाक दासी उस नर्मदासुन्दरी को तुरन्त अपने साथ हरिणी के घर ले आई। और उसे घर में छिपा दिया।

वीरदास अपना कार्य करके घर पहुँचा। घर पर नर्मदासुन्दरी को न पाकर बहुत व्यथित हुआ। उसने खोज करनी शुरू कर दी। नगर में उसने बहुत खोजा मगर जैसे निर्भागी को लक्ष्मी कहीं नहीं मिलती वैसे ही वीरदास को नर्मदासुन्दरी कहीं नहीं मिली। अन्त में हरिणी के घर आया। हरिणी को बहुत पूछा मगर उसने अनजान होने का अभिनय बहुत सफलता पूर्वक किया। वीरदास के बहुत प्रयत्न करने पर भी नर्मदासुन्दरी न मिलने पर निराश होकर वहाँ से भृगु कच्छपुर आ गया।

भृगु कच्छपुर में अपने परोपकार दक्ष मित्र श्रावक जिनदास के पास आया। अपनी व्यथा अपने मित्र को बताई। तब दूसरों के दु:ख में सदा साथ निभाने वाले ऐसे जिनदास श्रेष्ठी ने वीरास को सान्त्वना देते हुए कहा- मित्र! चिन्ता मत करो। मैं किसी न किसी उपाय से नर्मदासुन्दरी को खोज निकालूंगा। वीरदास ने जिनदास के वचनों से आश्वस्त होकर अपने बोझिल मन को कुछ हल्का महसूस किया। दयाभाव से भीगे मन वाले जिनदास ने अपना किराणे का सामान जहाज में भरकर बब्बरकुल की तरफ प्रयाण किया।

उधर वीरदास के बब्बर कुल से प्रयाण के समाचार पाकर नर्मदासुन्दरी को गर्भगृह से बाहर निकाला। उसने नर्मदासुन्दरी को वारांगना का आचरण स्वीकार करने के लिये बहुत प्रलोभन दिया मगर सती नर्मदासुन्दरी नहीं मानी, तो उसे डराया गया, धमकाया गया तब भी नहीं मानने पर कोड़ों से उस पर प्रहार किए गये। तब भी नर्मदासुन्दरी मन से भी जरा भी शील से विचलित नहीं हुई। नर्मदासुन्दरी के शील का

माहात्म्य प्रकटा और हरिणी की उसी दिन मृत्यु हो गई। हरिणी की मृत्यु के भय से बाकी की वेश्याओं ने भयभीत होते हुए कहीं और अनिष्ट न हो जाए। इसलिये नर्मदासुन्दरी को घर से निकाल दिया। यह बात सारे नगर में फैल गई।

इधर राजा ने नर्मदासुन्दरी के रूप-लावण्य की बात सुनी और उसे लाने के लिए अपने प्रमुख राजपुरुष के साथ एक पालकी भेजकर नर्मदासुन्दरी को लाने का आदेश दिया। राजा के व्यक्ति नर्मदासुन्दरी के पास पहुँचे और राजा का आदेश सुनाते हुए पालकी में बैठकर साथ चलने को कहा यह सुनते ही नर्मदासुन्दरी को शील पर मण्डराते बड़े संकट का आभास हो गया। शील रक्षा के लिए मन ही मन उपायों की खोज की। पालकी में न बैठकर पैदल ही साथ चलने लगी। उसने शील की रक्षा के लिए कृत्रिम रूप से पागल बनने का आचरण उचित माना और उसी समय से पागल की तरह अनेक प्रकार के कुतुहल शुरू किए। थोड़ी ही दूर चलने पर एक कीचड़ से भरा गड्ढा देखकर उसमें गिर गई। कीचड़ का अपने शरीर पर लेप करती हुई कहने लगी देखो देखो मैं अपने शरीर पर कस्तुरी का लेप कर रही हूँ। कोई उसकी तरफ बढ़ता तो वह उस पर कीचड़ उछालती। थोड़ी देर बाद गड्ढे से बाहर निकलकर अपने दोनों हाथों से रास्ते की धूल लेकर अपने सिर पर डालने लगी और थोड़ी-थोड़ी धूल लोगों की तरफ भी उछालने लगी। राजा के प्रधान पुरुषों ने राजा से उसके पागलपन की बात की।

राजा ने उसका पागलपन दूर करने के लिए झाड़-फूंक करने वाले मान्त्रिकों को बुलाया। मान्त्रिकों ने अपनी-अपनी समझ के अनुसार टोने-टोटके करने शुरू किए। अब नर्मदासुन्दरी ने पागलपन की हरकतों में और ज्यादा बढ़ोतरी कर दी। कभी हंसने लगती तो कभी अपना सिर दीवार से फोडती, कभी जोर-जोर से खिल-खिलाती। आखिर राजा ने उसको पागल जानकर अपनी इच्छा को अधूरा छोड़ उसे मुक्त कर दिया।

अब वह नगर में इधर-उधर घूमती रहती। बच्चे उसे चिढ़ाते तो कभी-कभी वह बच्चों को डराती। अन्यथा जिनस्तवन गाती रहती। उपाश्रय के पास में रहे एक खाली घर के बाहर बरामदे में अपना आवास बना लिया।

जिनदास श्रेष्ठी भृगुकच्छपुर से किराणे का सामान लेकर बब्बरकुल आ गए। व्यापार के अलावा उनका मुख्य ध्येय तो नर्मदासुन्दरी की खोज थी। वे आते-जाते ध्यान रखते थे। एक दिन बच्चों से घिरी हुई एक पागल महिला को देखा। जो जिन स्तवन गुनगुना रही थी। श्रेष्ठी ने नजदीक जाकर देखा और अनुमान लगा लिया कि यही नर्मदासुन्दरी है। वीरदास द्वारा बताए गए सारे लक्षण इसमें घटित हो रहे है। उसके नाक-नक्श, कद-काठी आदि आधारों पर अनुमान और गहरा हो गया। यह नर्मदासुन्दरी ही होनी चाहिये और जिनस्तवन सुनकर निश्चय कर लिया कि यह पागल नहीं हो सकती।

श्रेष्ठी ने सहज भाव से कहा हे पुत्री भय मत करो इतना कहकर जिनदास नर्मदा की तरफ बढने लगा। नर्मदा ने डरावनी मुद्रा बनाकर बच्चों को डराकर वहाँ से दूर भगा दिया। श्रेष्ठी ने वीरदास की भतीजी होने का अनुमान लगाते हुए पूछा हे बेटी! तेरी यह दशा कैसे? तुम्हारे चाचा वीरदास के कहने से मैं तेरी खोज के लिये यहाँ आया हूँ। यह बात सुनकर नर्मदा बोली- हे तात! मुझे इस संकट से निकालो तब जिनदास ने उसे समझाते हुए कहा कि तुम एक काम करो कि जिस राजमार्ग से नारियाँ कुएं से पानी भरकर घर की तरफ जा रही है। तुम उस राजमार्ग पर चलो और उनके पानी से भरे घड़ों को कंकर से वहाँ से फोड़ने लगो। दोनों ही राजमार्ग पर आ गए। नर्मदा पागलों की तरह अनेक प्रकार के कुतुहल करती रही। श्रेष्ठी द्रष्टा बनकर पीछे-पीछे चलने लगा। राजमार्ग पर कुतूहल करती हुई उसने नारियों के पानी से भरे घड़ों को कंकरों से फोड़ना शुरु किया। काफी समय तक यह क्रम चला।

नारियाँ रोश से भरकर गालियाँ देती हुई जाने लगी और राजा के सामने जाकर फरियाद करने लगी कि हमें उस पागल स्त्री से बचाओ। राजा ने घोषणा की कोई बहादूर पुरुष इस नारी के पागलपन से बचाने के लिए आगे आए। मगर हरिणी के मरने की घटना के कारण भयभीत लोगों ने बड़े अनिष्ट की आशंका के भय से किसी ने साहस नहीं किया नर्मदा के पागलपन को रोकने का।

तब योजना के अनुसार जिनदास श्रेष्ठी आगे आया और कहा कि अगर राजन् आपकी आज्ञा हो तो प्रजा के लिए यह प्रिय कार्य मैं कर सकता हूँ। मैं व्यापार के लिए यहाँ से दूसरे द्वीप जा रहा हूँ। इसे जहाज में डालकर दूसरे द्वीप में ले जाकर छोड़ दूंगा। राजा ने सहर्ष आज्ञा दे दी।

तब जिनदास ने सभी लोगों के सामने जबरदस्ती करते हुए उसके हाथ पैर बांध दिए। हाथ पैरों में बेड़ी डालकर उसे जहाज में डाल दिया। वहाँ जहाजों को तुरन्त रवाना किया। जहाज कुछ ही समय में वहाँ से चल पड़े। जैसे ही जहाज रवाना हुए त्योंहि नर्मदासुन्दरी ने कृत्रिम पागलपन का त्याग कर दिया। उसके बन्धन खोल दिए गए। उसे श्रेष्ठी जिनदास ने नये वस्त्राभूषण दिए। और वे जल्द ही भृगुकच्छपुर पहुँच गए। वीरदास के पास नर्मदा के मिलने का शुभ समाचार पहुँचा। वीरदास जिनदास श्रेष्ठी के यहाँ आया और जिनदास का महान उपकार मानते हुए प्रसन्न हुआ। नर्मदा को लेकर वीरदास अपनी नगरी नर्मदापुरी आ गया। सारा परिवार नर्मदा को पाकर पुलकित हुआ। नर्मदा ने पूरे परिवार को अपनी आप बीती सुनाई।

एक बार ज्ञानी गुरु भगवन्त नर्मदापुरी पधारे। जन-समूह ज्ञानी भगवन्त के दर्शन-वंदन के लिए उमड़ पडा। ज्ञानी भगवन्त ने परोपकार के शुभ लक्ष्य से देशना दी। देशना सुनने के बाद सहदेव ने अपनी पुत्री के साथ घटित घटनाक्रम बताकर पूछा- हे भगवन्त! नर्मदा के जीवन पर दु:खों के पहाड़ किस कारण टूट पड़े हैं? ज्ञानी भगवन्त ने नर्मदा का पूर्व भव बताते हुए कहा- यह पूर्व भव में नर्मदा नदी की अधिष्ठायिका देवी थी। एक बार शीत ऋतु में कोई मुनि शीत परिषह को सहने के लिए नर्मदा तट पर आये थे तब इसने उन पर दुर्भावना से उपसर्ग किए। मुनि को कष्ट दिए। मुनि समताभाव से सब सहन करते रहे। मुनि की समता को देख कर इसे अपने कुकृत्य पर पश्चाताप हुआ और भीतर सम्यक्त्व की ज्योति प्रकटी। उसने अपने कुकृत्य की क्षमायाचना की। वहाँ से मरकर यह तुम्हारी पुत्री के रूप में उत्पन्न हुई। और उसके द्वारा किये गये उस उपसर्ग का फल इस भव में प्राप्त हुआ है। पूर्वभवों के संस्कार के कारण इसके गर्भ में आते ही तुम्हारी पत्नी को नर्मदा-स्नान का दोहद उत्पन्न हुआ। साधु को उपसर्ग देने के कारण से इस पर ये दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा। इस बात को सुनकर वहीं उपस्थित नर्मदा को जाति-स्मरण ज्ञान उत्पन हुआ। अपना पूर्वभव जानकर उसको वैराग्य उत्पन्न हुआ। परिवार से आज्ञा लेकर उसने संयम ग्रहण कर लिया।

दीक्षा ग्रहण करके स्वाध्याय की ज्योति जलाई। एकादशांगी का अध्ययन किया। विभिन्न प्रकार के तपों की अग्नि प्रज्जवलित करके कर्मों के कचरे को जलाकर स्वयं को निर्मल बनाने का प्रयास किया। तप के कारण वह शुष्क बन गई। विहार करते-करते एक बार चन्द्रपुर नगर पहुँचे। चन्द्रपुर में महेश्वरदत्त के उपाश्रय में रुके।

श्वसुर, सास और पति को पहचान लिया। सभी को शुभ भावना से धर्म श्रवण कराने लगी। वे लोग नर्मदा को पहचान नहीं पाये। एक दिन महासती ने स्वर लक्षणादि ज्ञान के बारे में प्रवचन दिया। जिसमें बताया गया कि स्वर के आधार पर गाने वाले व्यक्ति की उम्र शरीर की स्थिति, शरीर पर तिल व मस्सादि को भी जाना जा सकता है। यह बात सुनकर महेश्वरदत्त को अतीत की स्मृति हो आई। महेश्वरदत्त ने सोचा शास्त्रों में इस प्रकार का ज्ञान वर्णित है और ऐसे ज्ञान के ज्ञाता भी मिलते है तब तो मेरे द्वारा निश्चित ही बड़ा अपराध हुआ है।

महेश्वरदत्त बोला- हे महासती! मेरे द्वारा एक निर्दोष स्त्री का त्याग किया गया है। वह इस विद्या की ज्ञाता थी और मैंने संदेह के कारण उसे असती मानते हुए उसे एकाकी छोड़ दिया। अब वह कैसी होगी? तब महासती ने कहा खेद मत करों। वह नर्मदासुन्दरी मैं ही हूँ। उसे विश्वास दिलाने के लिये सारा वृतान्त सुना दिया। महेश्वरदत्त ने पहचानकर क्षमा मांगी। तब महासती ने कहा कि इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं मेरे द्वारा पूर्व में किए गए अशुभ कर्मों का ही वह परिणाम था।

महेश्वरदत्त को भी वैराग्य उत्पन्न हुआ। ऋषिदत्ता भी वैराग्य वासित बनी। माँ और पुत्र दोनों ने दीक्षा ली। तीनों ने संयम पालन करते हुए अन्त में अनशन कर देवलोक में गए। और वहाँ से एक भव करके मोक्ष प्राप्त करेंगे।

जिन-
स्तुतिः

श्री आदिनाथाष्टकम्

(अनुष्टुब्वृत्तेन)

रचयिता– मुनिः मलयप्रभसागरः

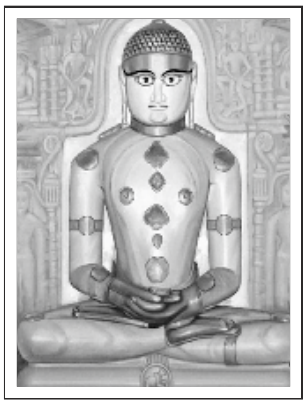

विनीतानगरीभूपं, श्रीशत्रुञ्जयमण्डनम् । प्रथमं नरनाथं च, युगादिकारिणं नुवे ॥१॥

भावार्थ– तीर्थाधिराज शत्रुञ्जय के मण्डन, विनीता महानगरी के राजा एवं युग की आदि करने वाले ऐसे पहले नृपति को मैं नमन करता हूँ।

श्रीनाभेयं जगद्वन्द्यं, मारुदेवं महाप्रभुम् । इक्ष्वाकुवंशचन्द्रं तं, भार्याद्वययुतं स्तुवे ॥२॥

भावार्थ– पिता नाभिकुलकर व माता मरुदेवी के पुत्ररत्न, तीनों लोक में वन्दनीय, इक्ष्वाकु वंश में सौम्य चन्द्र समान शोभने वाले और सुनन्दा-सुमङ्गला के भर्ता ऐसे (आदिनाथ प्रभु को) मैं नमन करता हूँ।

चक्रेश्वरीनतन्नौमि, गोमुखयक्षसेवितम् । देवदानवदेवेन्द्र-पूजितवृषलाञ्छनम् ॥३॥

भावार्थ– चक्रेश्वरी देवी द्वारा वन्दित एवं गोमुख यक्ष द्वारा सेवित और देव-दानव-देवेन्द्रों के द्वारा पूजित वृषभ लाञ्छन वाले ऐसे (ऋषभदेव को) मैं नमन करता हूँ।

श्रीकौशलिकमर्हन्तं, काञ्चनकायधारिणम् । सम्प्राप्तकेवलज्ञानं, प्रथमं यतिपं नुवे ॥४॥

भावार्थ– कञ्चन काया वाले और जिन्होंने लोकालोकप्रकाशक केवलज्ञान प्राप्त कर लिया है ऐसे प्रथम यतीश्वर श्रीकौशलिक (आदिनाथ) परमात्मा की मैं स्तुति करता हूँ।

धनुःपञ्चशतीकायं, पुत्रशतसमन्वितम् । जगन्नाथं सदा नौमि, पुत्रीयुगलधारिणम् ॥५॥

भावार्थ– पांच सौ धनुष की काया वाले और 100 पुत्र एवं पुत्रियुगल के पिता ऐसे जगन्नाथ को मैं सदा-सदा नमन करता हूँ।

सुसाधुपुण्डरीकादिगणनायकनायकम् । दीर्घायुष्कमुनीन्द्रं तं, स्तौमि प्राणप्रियं मुदा ॥६॥

भावार्थ– साधुश्रेष्ठ पुण्डरीकादि गणधरों के नायक और जो मुझे प्राणों से भी प्यारे है ऐसे दीर्घायु आदिनाथ भगवान् की मैं स्तुति करता हूँ।

अजरममृतं वन्दे, निर्विकारं जिनेश्वरम् । वीतरागं गतद्वेषं, निष्कलङ्कं प्रियङ्करम् ॥७॥

भावार्थ– अजर-अमर, निर्विकारी, जिनेश्वर, वीतरागी, वीतद्वेषी, निष्कलंक और इच्छित करने वाले ऐसे (आदिनाथ प्रभु) को मैं वन्दन करता हूँ।

अष्टापदे महातीर्थे, दशसहस्रसाधुभिः । आदिनाथो शिवं प्राप्तो त्यक्तसंसारकाननैः ॥८॥

भावार्थ– भव-अटवी का जिन्होंने त्याग कर दिया है ऐसे 10 हजार साधुओं के साथ अष्टापद महातीर्थ पर आदिनाथ परमात्मा ने सिद्धगति को प्राप्त किया।

पादलिप्तपुरे 2/10/2020

गीत
गाता चल
2

गिरनारी मन को लुभावे

मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी म.

(तर्ज- मेरा भोला है भंडारी)

यदु कुल का तूं चंदा नेमि बडा ही दयाला जी
जग को शीतलता देता चढे डूंगरी
जंगल में फूलों जैसा प्रेम रस वाला तूं
राजुल रस पीने आई बने भवरीं
गिरनारी...ऽऽऽऽऽऽ
गिरनारी तेरी प्रतिमा सबके मन को लुभावे रे हो
(जय हो गढ गिरनार बोलो, जय हो नेमिनाथ...)
धरती का वह तिलक समाना
पाता है जग में बहुमाना
पावन है गिरनारा...
गिरनारी...ऽऽऽऽऽऽ ।।1।।

न्हवणा मैं देखूं तेरा मन को लुभाता जी वो
काले काले मुखडे पे प्यारा वो जी
काले बदल में चंदा मामा ज्यों प्यारा
न्हवणा प्यारा वो लागे भक्तों को जीऽऽऽ
सोने का मुकुटा नेमि लागे सुहाना
टीका हीरो का मन भावन जी...
गिरनारी...ऽऽऽऽऽऽ ।।2।।

सेवा मैं चाहूं तेरी अवसर हूँ मांगता
आशा वो पूरी होगी अन्तर की जी
'कान्ति-मणि' विनंति करता 'नेमि' तेरे चरणे
साथ मेरे रहना मेरी छावँ सा हो जी...
गिरनारी...ऽऽऽऽऽऽ ।।3।।

मेरा नेमि है गिरनारी, करता भक्तों की रखवारी
नेमिनाथ रे राजुलनाथ रे, दिल के नाथ रे...
तेरी महिमा है अतिभारी, गाती है दुनिया ये सारी
नेमिनाथ रे, राजुलनाथ रे, दिल के नाथ रे
नेमिनाथाजी, भक्त तेरा यह गाता जी,
शरणे तेरे आता जी, पाता हर पल शाता जी
काले ये शिखरों वाला, मेरा नेमिबाबा चढके गिरनार बैठा नेमिनाथ जी
गिरनारी...ऽऽऽऽऽऽ ।।4।।

Scan me Now
for Song

गीतिका

पुण्य धरा माण्डवला

प्रतिभा बोथरा सूरत

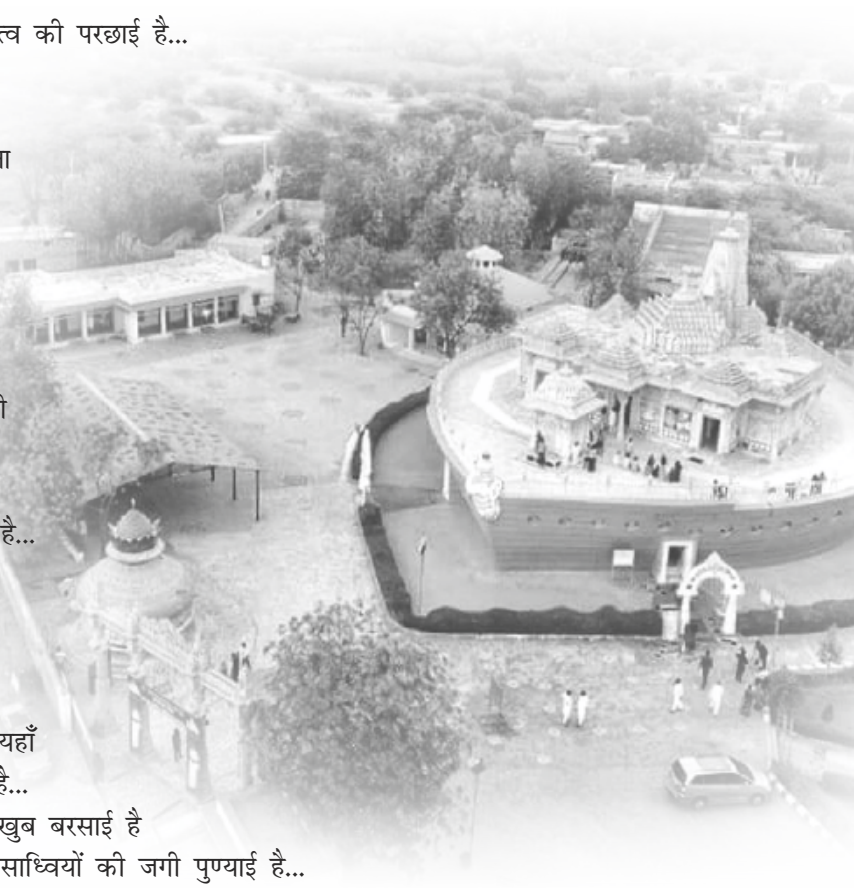

पावन-पुनीत-पुण्य धरा माण्डवला
यहाँ कण-कण में दिव्यता समाई है...
जैन धर्म धरोहर भव्य 'जहाज मंदिर'
'आचार्य श्री जिनकांतिसूरिजी' के व्यक्तित्व की परछाई है...
गुरु का पावन समाधि स्थल यह
ये धरा आशीषों से सरसाई है...
'श्री जिनमणिप्रभसूरिजी' की प्रबल भावना
यह भेंट गुरु को चढ़ाई है...
जैसा अटल-अडिग-विराट रूप गुरु का
वैसी छवि 'जहाज मंदिर' की बनाई है...
मनमोहक प्रतिमाएं देव-गुरु-प्रभु की
हर मूरत मन से सजाई है...
रंग-बिरंगे काँचों से सजी जगमगाहट ऐसी
हजारों दीपशिखाएं जैसे झिलमिलाई है...
यहाँ भक्ति की खुशबू-श्रद्धा से रूबरू
आस्था के रंग निष्ठा भावों की अरुणाई है...
साधना-आराधना आत्मीय रमण का धाम
यहाँ शांति और सुकुन की गहराई है...
ऊर्जा-चेतना-प्रेरणा की अनुभूति
इस महान तीर्थ की अनन्त ऊंचाई है...
जो भी आया है श्रद्धा से गुरु-चरणों में यहाँ
उसकी जिंदगी फिर जिंदगी-भर हरसाई है...
आज विपदा के दौर में गुरुवर ने, कृपा खुब बरसाई है
विराजे है साथ गुरु धाम में सभी, साधु-साध्वियों की जगी पुण्याई है...
खरतरगच्छ संघ का ऐतिहासिक चातुर्मास
गुरु 'मणि-मनोज्ञ' साथ करते अगुआई है...
चलता स्वाध्याय-अध्ययन, पठन-पाठन अविरत
ऐसी अनुशासित- व्यवस्थित राहें बनाई है...
स्वच्छ, सुन्दर, रमणीय वातावरण
यहाँ समर्पणा की गुंजती शहनाई है...
हर श्वास-हर अहसास गुरुमय, गुरु चरणों में 'प्रतिभा' निखर आई है
सश्रृद्धेय नमन इस पुण्य धरा को, यहाँ कण-कण में प्रीत समाई है ।।1।।

यादें

एक दर्दभरा अध्याय

—आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.

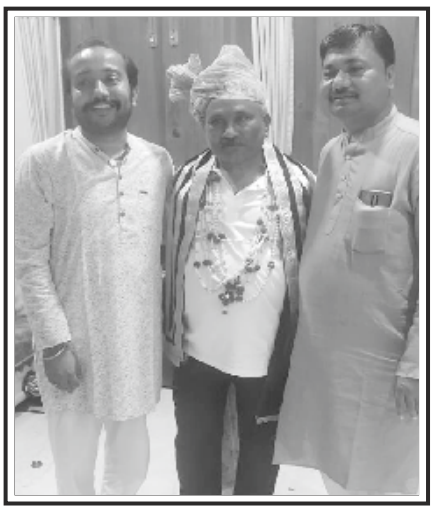

मौन एकादशी के उपवास का पारणा संपन्न हो गया था। ठीक 9.40 पर योग विंशिका की वांचना प्रारंभ होकर 10.20 पर पूरी हो गई थी। वांचना के बाद सामान्य प्रश्नोत्तर चल रहे थे। तभी प्रकाशजी छाजेड का दूरभाष पर संदेश मिला। उस संदेश को मुकेश ने जब हमें सुनाया तो हम सभी अवाक् रह गये। मन पीड़ा से भर उठा।

डीसा से पधारने वाले जिन श्रावकों की हम प्रतीक्षा कर रहे थे, उन श्रावकों के दुर्घटना में मृत्यु के समाचारों ने घोर पीड़ा उपस्थित कर दी।

ओह! कैसे... यह क्या हो गया...! विश्वास नहीं हुआ।

जीवदया प्रेमी श्री भरतभाई कोठारी, केयुप डीसा के अध्यक्ष व आगेवान श्रावक श्री विमलजी बोथरा, केयुप डीसा के महामंत्री आगेवान श्रावक श्री राकेशजी धारीवाल....! ऐसे तीन विशिष्ट नर-रत्नों की असमय विदाई... हृदय घोर पीड़ा से भर गया।

कल ही मुकेश के माध्यम से समाचार मिला था कि कल प्रातः डीसा से रवाना होकर जहाज मंदिर आ रहे हैं। आपके दर्शन करेंगे व चर्चा विचारणा करेंगे।

श्री भरत भाई का परिचय सन् 2008 में हुआ था। उनका नाम और काम तो बहुत सुना था। जीवदया का कार्य जिस दबंगता, नीडरता और पूर्ण श्रद्धा से करते थे, उसका विवरण श्रवण कर हृदय अत्यन्त अनुमोदना से भर उठता था।

सन् 2008 में संघवी गुलेच्छा परिवार द्वारा आयोजित मोकलसर से पालीताना पद यात्रा संघ के विहार-पथ में उनका मिलना हुआ था। इतना सरल व सादगीपूर्ण व्यक्तित्व देखकर हृदय अत्यन्त प्रभावित हुआ था।

गतवर्ष पाटण से डीसा के विहार में हमें उनके साथ विमलजी, राकेशजी और बाडमेर ग्रुप की पूरी सेवाऐं मिली थी। डीसा में जब हम 15 जनवरी को डीसा पहुँचे थे, तब भव्य प्रवेश... प्रवचन व स्वामिवात्सल्य का आयोजन... इन सबमें उनकी प्रमुख भूमिका थी। उस समय हमने सकल श्री संघ को जोडने का उनका पुरुषार्थ अनुभव किया था। उनकी सक्रियता, श्रद्धा, भक्ति, प्रेम सतत आंखों के सामने घूम रहा है।

उस दिन प्रमुख श्रावकों की बैठक हुई थी, जिसमें दादावाडी एवं उपाश्रय बनाने की चर्चा की थी। केयुप डीसा की रचना ने युवाओं को पूर्ण रूप से सक्रिय किया था। श्री विमलजी केयुप डीसा के अध्यक्ष बने थे जबकि राकेशजी धारीवाल को राष्ट्रीय कार्यकारिणी में सम्मिलित किया गया था। विमलजी की अध्यक्षता में केयुप के माध्यम से कई धार्मिक, सामाजिक व जीवदया के कार्य संपन्न हुए थे।

गच्छ के साधु साध्वियों का जब भी डीसा प्रवास होता, उनके वैयावच्च आदि का वे पूरा ध्यान रखते थे।

श्री भरत भाई कोठारी के स्वर्गवास से संघ व समाज ने एक मूल्यवान् हीरा खो दिया है। उन्होंने अपने जीवन में हजारों पशुओं को कत्लखाने जाने से बचाया था।

कसाईयों के कितने ही हमलों का सामना किया था। कई बार वे मौत के समीप पहुँचकर लौटे थे। डीसा गोशाला

के पशु भी क्रन्दन कर रहे हैं। उन्हें बचाने वाले व्यक्तित्व की विदाई में उनकी आंखों से अश्रुधार बह रही है।

उनके अग्निसंस्कार के समय आशीर्वाद की मुद्रा में उठे हाथ वाली चमत्कार परिपूर्ण घटना जिसे हमने श्रावकों के माध्यम से सुना, उनके पवित्र और निर्दोष जीवन को व्यक्त करती है।

श्री भरतभाई, श्री विमलजी व श्री राकेशजी के स्वर्गवास से परिवार ने तो अपना सरताज खोया ही है, हमने, समाज ने, जिनशासन ने बहुत कुछ खोया है, जिसकी क्षतिपूर्ति अशक्य है।

इसे योग मानकर या आयुष्य कर्म की पूर्णता समझकर सान्त्वना धारण करनी होती है।

दिवंगत आत्माऐं शांति व सद्गति प्राप्त करें व क्रमशः कर्मनिर्जरा कर मोक्ष का वरण करें, यही कामना है।

(शेष पृष्ठ ९ का)

डागा गोत्र...

बादशाह आंखें मलते हुए उठ बैठे। वे आंखें फाड-फाडकर इस जगह का अवलोकन करने लगे।

वे बोले- मैं कहाँ आ गया! यह स्थान कौन-सा है! आप लोग कौन हैं? ये फकीर कौन है?

तब डूंगरसिंहजी बोले- मैं चौहान डूंगरसिंह हूँ, जिसे पकडने के लिये आपने सेना भेजी है। सेना तो अभी तक पहुँची नहीं है। और आपको यहाँ बुला लिया है।

डूंगरसिंहजी ने गुरुदेव की ओर इशारा करते हुए कहा- यह सब गुरुदेव का ही चमत्कार है।

बादशाह यह सब देखकर भयभीत हो गया। वह तुरंत उठा और गुरुदेव के श्रीचरणों में अपना ताज रखते हुए बोला- हे परवरदिगार! आपको इस खुदाई कुदरत के लिये प्रणाम करता हूँ।

मेरे लिये हुक्म फरमाईये। क्या आज्ञा है मेरे लिये!

गुरुदेव ने धर्मलाभ देते हुए कहा- श्री डूंगरसिंहजी हमारे श्रावक हैं। इनको और आपके राज्य में जो भी जैन हों, उन्हें कभी परेशान नहीं किया जावे।

बादशाह ने आज्ञा को शिरोधार्य किया।

गुरुदेव ने कहा- जाओ! पलंग पर आंख बंद कर सो जाओ।

भैरव उन्हें पुनः दिल्ली महल में छोड आया।

श्री डूंगरसिंहजी ने गुरुदेव से जैन धर्म स्वीकार किया। उनकी संतान डागा कहलायी।

भाईजी श्री हरखचंद नाहटा स्मृति उद्यान का उद्घाटन

मांडवला 7 दिसंबर। जहाज मंदिर में प्रतिष्ठा से पूर्व महामंगलकारी उपधान तप का पूर्ण लाभ प्राप्त करने वाले, जहाज मंदिर प्रतिष्ठा समिति के स्वागताध्यक्ष स्वनाम धन्य सर्व श्री हरखचंदजी नाहटा के नाम से जहाज मंदिर में विशाल उद्यान निर्मित किया गया है।

इस उद्यान में बालकों के मनोरंजन हेतु झूले आदि भी लगाये गये हैं। इस उद्यान का उद्घाटन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री उत्तमचंदजी रांका, कार्याध्यक्ष श्री द्वारकादासजी डोसी, श्री गुणायाजी जीर्णोद्धार मुख्य समिति के सदस्य श्री महावीरजी मेहता द्वारा पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की 35वीं पुण्यतिथि मिगसर वदि 7, सोमवार ता. 7 दिसम्बर 2020 को किया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष श्री प्रकाशजी छाजेड, मंत्री श्री सूरजमलजी देवडा धोका, श्री रामरतनजी छाजेड आदि बडी संख्या में श्रावक गण उपस्थित थे।

संयम गीतिका

'मनोज्ञ' संयम दिन आया है

—साध्वी श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी म.

खरतरगच्छ के नभमण्डल में, एक रोशनी आज टीम-टीमाई थी ।
शाश्वत तीर्थ की धन्यधरा पर, गुरु 'कान्ति' ने वह प्रकटाई थी ।।

पिता-पुत्र की एक प्यारी जोड़ी 'प्रताप-मनोज्ञ' अभिधा को पायी थी ।
जिनशासन के अणगार बनकर, वसी की शान बढायी थी ।।

कुशलगुरु के गौत्रज-वंशज, कृपा भी अनवरत बरस रही ।
ब्रह्मसर तीर्थोद्धार की गाथा, मनोज्ञ-स्पर्श से सरस रही ।।

गाँव-गाँव में विचरण करके, अज्ञों को सुज्ञ बनाया है ।
हे! वसी-मालाणी के उद्धारक, तुम यशोगान को मरुभू तरस रही ।।

47 वर्ष की संयम यात्रा गाथा हे प्रेम समर्पण की ।
एक हाथ हो मेरे सिर पर, अन्तर इच्छा के तर्पण की ।।

गुरुमात, गुरुवर और पितृ-चरणों में, मिश्री के जीवन अर्पण की ।
स्वच्छ, निर्मल और निष्कपट, भाव जगत के दर्पण की ।।

पंचम पद से तृतीय पद की यात्रा, प्रताप-देमी का मान बढाती है ।
शेष द्विपदों को शीघ्र वरे आप, सौम्य भावना मन भाती है ।।

'मणि-मनोज्ञ' की जोड़ी देखकर, वीर-गौतम की छवि छा जाती है ।
विनय प्रेम और स्नेह की शिक्षा, सज्जन मन को लुभाती है ।।

दिव्यलोक से कान्तिगुरु ने प्रताप अपना लुटाया है ।
तप साधना के बन्द पडे द्वारों को, खोल तुम्हें चमकाया है ।।

कल्पज्ञ-नयज्ञ को संयम देकर, समकित से नहलाया है ।
सरल सहज उदात्त वृत्ति ने पुण्य सम्राट के पास बिठाया है ।।

गुरु तीर्थभूमि माण्डवला में 'मनोज्ञ' संयम दिन आया है ।
शुभ भावनाओं का थाल सजाकर, श्रमणी मण्डल आया है ।।

चिरायु-शतायु बनो गुरुवर, तुमसे ही गच्छ सवाया है ।
शशिप्रभा ने विमल कल्प सह, आशीष को शीष नवाया है।।

अमिट यादें

विमलजी बोथरा : जिनशासन के उज्ज्वल नक्षत्र

—मुमुक्षु रजत सेठिया, चोहटन

मेरे प्यारे मासोसा ...

मात्र 44 वर्ष की उम्र में संसार के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक क्षेत्र में भी लोगों के दिल में जगह बनाने वाले विमल-सा का जीवन सबके लिये प्रेरणा-स्त्रोत हैं। 26.12.2020 के दिन डीसा से जहाज मंदिर-माण्डवला की ओर गुरु-दर्शनार्थ यात्रा के दौरान जहाज मंदिर से करीबन 25 कि.मी. पहले एक कुत्ते को बचाने के शुभ भावों को हृदय में लिये अचानक गाड़ी की स्टेयरिंग घूमी और गाड़ी पेड़ से जा टकराई। इस सड़क दुर्घटना के कारण जिनशासन को महती क्षति हुई, जिसे पूर्ण कर पाना शक्य नहीं। क्योंकि हमने अनमोल तीन श्रावकरत्न; विमलजी बोथरा, भरत भाई कोठारी और राकेशजी धारीवाल को खो दिया। एक ऐसी दुर्घटना जिसका स्मरण करते ही पैरों तले जमीन खिसक जाती है।

करीब 12.30 बजे मुझे इस दुर्घटना के समाचार मिले और तुरन्त जालोर Hospital पहुँचने पर जब मैंने शव को देखा तो मेरा रोम-रोम काँप उठा। रह-रहकर बस यही बात दिमाग में घूम रही थी कि- भगवान्! ये सब क्या हो गया? ऐसा क्यों हुआ? Please! इन सबको पुनः जीवित कर दो। पर... हर पल अफसोस रहता है कि विधि का यह कैसा विधान है, जिसे कोई नहीं बदल सकता तीर्थंकर जैसे तीर्थंकर भी नहीं।

धर्म की सही समझ, गुरु भगवंतों की वैयावच्च, गोचरी-पानी वोहराने में सदा तत्पर, डीसा के किसी भी धार्मिक-अनुष्ठान में आगेवान। अरे! लॉकडाउन की ऐसी विकट स्थिति में भी गौ-सेवा के लिए फंड इकट्ठा करना उनकी तीक्ष्ण बुद्धि और स्नेहपूर्ण व्यवहार-शैली का ही परिचायक है। जीवदया-प्रेमी, कर्मठ-कार्यकर्ता, शासनरत्न जैसे कई विशेषणों से अलंकृत था उनका जीवन!

इस दुर्घटना के कुछ दिन बाद जब मैंने डीसा में इनकी Family के साथ Time-Spend किया तब स्वाभाविक है कि विमल-सा की माताजी, धर्मपत्नी और दो बच्चे अंजली दीया के हृदय की पीड़ा अपार थी, आँखें नम थीं परन्तु सबके Positive विचारों से मैं प्रभावित हुए बिना न रहा!

वह माँ कहती- मुझे फक्र है अपने चिराग पर जिसने अपना जीवन परिवार के हित के लिये ही नहीं बल्कि अबोल जीवों के लिए, समग्र शासन के लिए भी जीया।

उनकी धर्मपत्नी कहती- मेरा सुहाग हर पल मेरे साथ है। अपने पापा को खोने के बाद जैसे वो कभी अपनी जिंदगी में हारे नहीं, हर स्थिति का डटकर सामना किया अब मुझे भी उनकी तरह मजबूत बनना है।

पापा की Princess वो बच्चियाँ कहती- पापा! हमेशा हमारे पास ही है। हमें पापा की तरह Strong बनना है। पापा के सपनों को साकार करना है। पापा ने जो सिखाया है, उसे जीवन की हर डगर पर याद रखना है। संसार की क्षणभंगुरता जिनोपदेश की सत्यता और जिनधर्म में रमणता इन तीन तत्त्वों को समझाने का मेरा प्रयास रहा तो वहीं दूसरी ओर बहुत कुछ सीखने को भी मुझे मिला। जिनाज्ञा विरुद्ध लिखने में आया हो तो क्षमाप्रार्थी हूँ।

मुमुक्षुद्वय की दीक्षा २२ फरवरी को

सिवनी 21 नवंबर। अष्टापद तीर्थ प्रेरिका, साध्वी श्री जिनशिशुप्रज्ञाश्रीजी म.सा. के चरणों में सर्वस्व समर्पित करने वाली द्वय मुमुक्षुरत्ना श्रीमती कंचन देवी एवं कु. क्षमा बोथरा का दीक्षा समारोह 22 फरवरी 2021 को होगी। यह घोषणा आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी महाराज द्वारा 21 नवंबर को की गई।

आचार्य जिनमनोज्ञसूरिजी म. का दीक्षा दिवस मनाया गया

मांडवला 2 दिसंबर। पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के सानिध्य में पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. के संयम पर्याय के 47 वर्ष पूर्ण होकर 48वें वर्ष में मंगल प्रवेश पर वर्धापना समारोह का आयोजन जहाज मंदिर में मिगसर वदि 2, ता. 2 दिसम्बर 2020 को किया गया।

इस अवसर पर पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने कहा- मुझे आज विक्रम संवत् 2030, सन् 1973 का वह समय याद आ रहा है जब मेरी दीक्षा के मात्र साढे चार महिने बाद इनकी अपने पिताजी के साथ दीक्षा हुई थी। साथ-साथ रहना, पढना वो वातावरण ही अपने आप में अद्भुत था। इन्होंने बाडमेर-जैसलमेर जिले के छोटे-छोटे गांवों में विचरण कर धर्म की अलख जगायी है। न केवल जैन समाज में अपितु अन्य समाज को भी धर्म का मार्ग दिखाया है। हजारों परिवारों को इन्होंने मांस-मदिरा आदि का त्याग करवाया है।

ब्रह्मसर तीर्थ का उद्धार, बकेला तीर्थ का उद्धार इनके ही पुरुषार्थ का परिणाम है। मेरी कामना है कि ये अपने जीवन में खूब आगे बढे। पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने कामली ओढाकर वर्धापना दी। इस अवसर पर पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म. ने कहा- मैं आज जो कुछ भी हूँ, पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की परम कृपा से ही हूँ। आज मेरे लिये परम सौभाग्य की बात है कि पूज्यश्री के इस समाधि तीर्थ पर मेरे दीक्षा दिवस का अवसर उपस्थित हुआ है। मुझ पर मेरे बडे गुरु भ्राता गच्छाधिपतिश्री का अथाह प्रेम है। मेरी प्रार्थना है कि उनका आशीर्वाद मुझे सतत प्राप्त होता रहे। इस अवसर पर पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म., मुनि श्री नयज्ञसागरजी म., प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म., साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म., साध्वी श्री अनंतदर्शनाश्रीजी म., साध्वी श्री नूतनप्रियाश्रीजी म., साध्वी श्री श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए दीक्षा दिवस पर शुभकामना अर्पण की।

पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की ३५वीं पुण्यतिथि मनाई गई

मांडवला 7 दिसंबर। परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्ति सागरसूरीश्वरजी म. सा. की 35वीं पुण्यतिथि उनके समाधि मंदिर जहाज मंदिर में उनके शिष्य पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. ठाणा 8 एवं पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 8, पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 14, पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा 7 आदि विशाल साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में मनाई गई।

इस अवसर पर पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने पूज्य गुरुदेवश्री के दिव्य व्यक्तित्व व कृतित्व का स्मरण किया। उन्होंने अपनी दीक्षा के संस्मरण सुनाये। पूज्य गुरुदेवश्री की अंतिम समय के वातावरण को प्रत्यक्ष किया।

उन्होंने कहा- पूज्यश्री को एक दिन पूर्व ही आभास हो गया था कि मेरा अंतिम समय आ गया है। यह उनकी दिव्य साधना का परिणाम था। अग्निसंस्कार के समय चिता से उनके द्वारा अपने पौद्गलिक हाथों से आधा घंटे से अधिक समय तक दिया गया चमत्कारिक आशीर्वाद उनकी प्रत्यक्ष/परोक्ष कृपा को प्रकट कर रहा था।

उन्होंने कहा- मेरा हर पल पूज्य गुरुदेवश्री का साक्षात् अनुभव कर रहा है। वे आज भी मेरे पास ही हैं।

पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरिजी म. ने कहा- पूज्यश्री वात्सल्य के भंडार थे। मुझ पर उन्होंने जो कृपा की बरसात की, उसी के परिणाम स्वरूप मैं कुछ कर पा रहा हूँ। बोलते-बोलते उनकी आंखों से अश्रुधार बह निकली।

समारोह का संचालन करते हुए पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने कहा- गुरु महाराज के मैंने प्रत्यक्ष रूप से 6-7 साल की उम्र में दर्शन किये थे, उनकी कृपा अनवरत बरसी थी। तभी तो मुझे उनका प्रशिष्यत्व प्राप्त हुआ। निश्चित ही उस समय उन्होंने मुझे परम महर नजर से देखा होगा। मैं तो उन्हें चमत्कारी गुरुदेव के रूप में जानता हूँ। मेरा अनुभव है कि हर कष्ट-बाधा को वे सहने की और समझने की शक्ति देते हैं। अपरिहार्य स्थितियों में उसका निराकरण भी करते हैं।

उन्होंने कहा- यह सोचते हुए मैं आश्चर्य से अभिभूत हो जाता हूँ कि एक ही व्यक्तित्व में लघुता और विद्वत्ता, यशस्विता और निर्लिप्तता, कठोरता और कोमलता जैसे विरोधी रह सकते हैं, पर यह गुरु पद की ही महिमा है, जो अकल्पनीय को भी साकार कर देते हैं।

पूज्य मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. ने कहा- पूज्य गुरुदेवश्री का प्रत्यक्ष चमत्कार मैंने यहाँ अनुभव किया है। मेरे

स्वास्थ्य की प्रतिकूलता में मैंने गुरुदेवश्री की समाधि भूमि पर अरदास अर्पण की। परिणाम स्वरूप दूसरे ही दिन मेरा स्वास्थ्य अनुकूल हो गया।

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. ने कहा- पूज्य गुरुदेवश्री का लम्बे समय तक हमें आशीर्वाद मिला है। कितने ही प्रसंग हैं, जिनमें हमें उनकी निश्रा प्राप्त हुई थी। वे परम पुण्यशाली थे। प्रखर वक्ता थे। गुणों के भंडार थे।

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्यश्री के हस्तदीक्षित पूजनीया साध्वी श्री विश्वरत्नाश्रीजी म. ने कहा- यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे उनके करकमलों से रजोहरण प्राप्त हुआ। सिवाना का वह अन्तिम चातुर्मास शासन प्रभावना के इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है।

पूजनीया साध्वी श्री अर्हम्निधिश्रीजी म. ने कहा- आज बाड़मेर के जैन समाज में जो मंदिरों के प्रति आस्था प्रतीत हो रही है, वह पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री के ही प्रबल पुरुषार्थ का परिणाम है। मेरा सौभाग्य है कि मैं उसी क्षेत्र से हूँ, जिस क्षेत्र पर पूज्य आचार्यश्री का परम उपकार रहा है।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् की राष्ट्रीय चेयरपर्सन श्रीमती नर्बदा जैन ने पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति अपनी श्रद्धांजली अर्पण की।

गुणानुवाद सभा से पूर्व पूज्य आचार्यश्री के छाया चित्र पर वासक्षेप पूजा की गई। उसका लाभ मोकलसर निवासी श्री गिरधारीलालजी बाबुलालजी अशोककुमारजी महावीरचंदजी मेहता लूंकड परिवार ने लिया। पुष्पहार अर्पण करने का लाभ बाडमेर निवासी श्रीमती टीपूदेवी भूरमलजी बोथरा परिवार ने, धूप पूजा का लाभ धोरीमन्ना निवासी शा. बाबुलालजी भूरमलजी लूणिया तथा दीप पूजा का लाभ श्री प्रकाशचंदजी पारसमलजी छाजेड परिवार सांचोर वालों ने लिया।

पूज्य आचार्यश्री द्वय तथा प्रवर्तिनीजी आदि साध्वीजी म. को गुरुपूजन व कामली वहोराने का लाभ मोकलसर निवासी श्री गिरधारीलालजी बाबुलालजी अशोककुमारजी महावीरचंदजी मेहता लूंकड परिवार ने लिया।

पाली में मासक्षमण पारणोत्सव

पाली 14 दिसंबर। खरतरगच्छ विभूषण पू. मोहनलालजी म. के समुदायवर्ती गणाधीश पंन्यास श्री विनयकुशलमुनि गणिवर्य जी म. के शिष्य प्रवचनकार पू. विरागमुनिजी म.सा. के महामृत्युंजय तप (मासक्षमण तप) आराधना की पूर्णाहुति के अवसर पर दिनांक 14 दिसंबर 2020 को श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, पाली के तत्वावधान में श्री अनुभव स्मारक पाली संस्थान में प्रात:काल धर्मचर्चा हुई और उसके पश्चात पारणोत्सव का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर जयपुर, जोधपुर, रतलाम, ब्यावर आदि अनेक स्थानों से भक्तगण उपस्थित हुवे और गुरुदेव की तपश्चर्या की अनुमोदना की।

संयम अनुमोदनार्थ पूजा संपन्न

पाली 9 दिसंबर। पू. गणाधीश पंन्यास श्री विनयकुशलमुनिजी म. की आज्ञानुवर्तिनी सुदीर्घ संयम आराधक वयोवृद्ध साध्वी पू. श्री कुशलश्रीजी म.सा. के संयम जीवन के 83 वर्ष पूर्ण होने और 84 वर्ष में प्रवेश के शुभ अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ पाली द्वारा पू. मुनि श्री विरागमुनिजी म. एवं पू. भव्यमुनिजी म. की निश्रा में आदिनाथ पंच कल्याणक पूजा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संघ के सदस्यगण उपस्थित थे।

पू. कुशल श्री जी म.सा. की दीक्षा पू. बुद्धिमुनि जी म.सा. के द्वारा और बड़ी दीक्षा पू. लब्धिमुनि जी म.सा. द्वारा सम्पन्न हुई थी।

आदिनाथ जैन ट्रस्ट द्वारा कृत्रिम अंगों का वितरण

चैन्नई 12 दिसंबर। आदिनाथ जैन ट्रस्ट द्वारा चूलै स्थित आदिनाथ जैन सेवा केंद्र में जरुरतमंदों को सहायता सामग्री का वितरण किया गया! इस कैंप के मुख्य अतिथि डॉ.एस.पांडियन. आई.आर.एस. (एडिशनल कमिश्नर ऑफ आयकर विभाग), प्रसन्नचंदजी चोरड़िया, अशोकजी कवाड, संघवी किरणजी कांकरिया, प्रवीणजी टाटिया, विजयजी गाँधी थे।

आदिनाथ जैन ट्रस्ट के अंतर्गत करीब 16 प्रोजेक्ट हैं जो बिलकुल ही निशुल्क: चलाये जाते हैं। विकलांगों के लिए जयपुर टेक्नोलॉजी से पैर बनाये जाते है। जो कि उन्हें नि:शुल्क प्रदान किये जाते हैं। जरूरतमंदों को त्रि-साइकिल, व्हील चेयर, चश्मे, श्रवण सहायक यंत्र, फुट स्टिक, कैलिपर, पोलियो शूज आदि कई उपकरण प्रदान किये जाते हैं। साथ ही साधर्मिक भाई-बहनों के लिए साधर्मिक भक्ति की जाती है।

कैंप का मुख्य लाभ राजकुमारजी और रश्मिजी चंडक ने लिया। साथ ही राजेशजी और ममताजी कवाड ने भी अपनी पच्चीसवीं शादी की सालगिरह जरुरतमंदों के साथ मनाई। अतिथि के रूप में महेन्द्रजी चोरड़िया और अहमदाबाद से जयंतीलाल जैन भी उपस्तिथ थे। सभी अतिथियों का ट्रस्ट के समिति मेंबर विनय जैन और संतोष बरडिया ने माला और शॉल से सम्मान किया।

(शेष पृष्ठ १० का)

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

साथ ही कुछ खेद की बात है कि किन्हीं द्वेषी एवं स्वार्थी लोगों को शासन की प्रभावना अच्छी नहीं लगी और इस सब से असंतुष्ट होकर और अपना स्वार्थ साधने के लिये उन्होंने श्री गुरुदेव के विरुद्ध संघ के नाम से एवं स्वच्छंदता से गल्त एवं मिथ्या प्रचार किया है और करते हैं। वह सारा झूठा प्रचार द्वेष का परिणाम मात्र है। श्री संघ इस गंदे प्रचार के लिये किसी भी प्रकार जिम्मेदार नहीं है। द्वेषी और स्वार्थी जो श्री संघ का तथा जिनशासन का दोषी है, वह संघ के नाम का दुरुपयोग करता है। मिथ्या प्रचार भ्रम मात्र है। कोई भी इस असत्य प्रचार के भ्रम में न पडे।

भवदीय

श्रीजैन संघ समस्त, मैसूर, चातुर्मास कार्यकर्ता कमेटी

शा. एम. रिखबचंद मिट्टीलाल एण्ड को, शा. जेवरचंदजी रूपाजी एण्ड को., शा. शेषमल गेनाजी एण्ड को, शा. मोहनलाल घेवरचंद एण्ड को, शा. नेमीचंद वजेराज एण्ड को, शा. भगाजी गेनाजी एण्ड को, शा. मुन्नालाल मदनलाल एण्ड को, शा. बाबुलाल भवरलाल एण्ड को, शा. छोगाजी पन्नालाल, शा. तेजराज सज्जनराज एण्ड को.

इन सबके हस्ताक्षरों से यह परिपत्र प्रकाशित व प्रसारित किया गया था।

इस परिपत्र में पूज्य गुरुदेव के चातुर्मास का पूरा विवरण आगे लिखा है।

बाद में जिन व्यक्तियों ने गच्छवाद के कारण समस्याऐं उपस्थित की थी, उन्होंने पूज्यश्री से क्षमायाचना की। पूज्यश्री ने सरलता से कहा- यह एक सामान्य उपसर्ग था। जिसमें कर्म राज ही कारण थे। आप तो निमित्त थे। और परमात्मा की देशना निमित्त को दोष देना नहीं सिखाती।

इस घटना का विवरण सुनकर हमारा हृदय द्रवित हो उठा था।

मन चिंतन में उतरा था कि जीवन में कभी-कभी कैसी घटनाऐं घट जाती है!

यह तो गुरुदेव की कृपा थी जो पूज्यश्री इस उपसर्ग के जंजाल से सकुशल मुक्त हो गये थे। अन्यथा अविश्वास का वातावरण बनते देर नहीं लगती।

अधिकतर लोग तो सुनी-सुनायी बातों पर भरोसा करते हैं। न केवल भरोसा करते हैं, अपितु उसे पूर्ण सत्य मानकर प्रचार-प्रसार में अपना पूरा योगदान करते हैं।

लौद्रवा तीर्थ की ध्वजा सम्पन्न

लौद्रवा तीर्थ स्थित परमात्मा पार्श्वनाथ सहित समस्त जिनालयों की वार्षिक ध्वजा कार्यक्रम उपाध्याय प्रवर श्री भुवनचंद्रजी म. एवं साध्वी चारूयशाश्रीजी म. की पावन निश्रा में संपन्न हुआ। शुभ मुहूर्त में विधिकारक सुनील भाई डीसा ने स्नात्र महोत्सव के साथ अठारह अभिषेक द्वारा समस्त प्रतिमाओं का शुद्धिकरण, सतरह भेदी पूजा की गई। दोपहर में सभी जिनालयों एवं दादावाड़ी के शिखर पर ध्वजारोहण किया गया।

इस वर्ष की ध्वजा के लाभार्थी श्रेणिक भाई, जयंतीलाल, लालचंद शाह परिवार मुंबई एवं दादावाड़ी की स्थाई ध्वजा के लाभार्थी मुकेश भाई गोलेच्छा चेन्नई का जैन ट्रस्ट जैसलमेर द्वारा बहुमान किया गया। आगामी वर्ष की ध्वजा का लाभ मंजूदेवी अशोककुमार परमार चैन्नई परिवार ने लिया। इस अवसर पर अनिलभाई नवसारी, जैन ट्रस्ट जैसलमेर के अध्यक्ष महेन्द्रजी भंसाली, महेन्द्र राखेचा, नेमीचंद बागचार, धणेन्द्र राखेचा, गजेंद्र चौरड़िया, विजयसिंह कोठारी, सुरेन्द्र बाफना, पारस राखेचा, धर्मवीर राखेचा, स्वरूप बरड़िया, कीर्ति राखेचा, विमल जैन व भरत बरड़िया आदि उपस्थित रहे।

कान्ति मणि सरलक्ष्मी विहार धाम का उद्घाटन

सेलंबा 16 दिसंबर। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से कांति मणि सरलक्ष्मी विहार धाम का निर्माण किया गया है। इस विहार धाम का संपूर्ण निर्माण राजस्थान में शिवगंज वर्तमान में सेलंबा गुजरात निवासी श्री विमलचंदजी सौ. सरला बेन, पुत्र कल्पेश सौ. दीप्ति, संजय सौ. श्वेता सिद्धार्थ केतन उन्नति पालरेचा परिवार ने अपने माता पिता स्व. जीवीबाई खेमचंदजी पालरेचा की पुण्य स्मृति में किया है।

इस विहार धाम का उद्घाटन पूजनीया गणिनी प्रवरा आदि साध्वी मंडल के सानिध्य में 16 दिसम्बर 2020 को संपन्न हुआ। इस अवसर पर आसपास गांवों के बडी संख्या में भक्त जन उपस्थित थे। यह विहारधाम सेलम्बा और डेडियापाडा के मध्य कोडबा नामक गांव में बनाया गया है।

इस अवसर पर पू. साध्वी श्री हर्षप्रज्ञाश्रीजी म. व साध्वी श्री विरतिप्रभाश्रीजी म. ने प्रासंगिक प्रवचन फरमाते हुए लाभार्थी परिवार की अनुमोदना की।

यह ज्ञातव्य है कि इसी मार्ग पर चोपडवा नामक गांव में इसी परिवार की ओर से एक और विहार धाम का निर्माण हो रहा है।

पुण्यतिथि के उपलक्ष में जीवदया

सांचौर 7 दिसंबर। पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी महाराज की 35वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में पूजनीया साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा के सांनिध्य में सांचौर में जीवदया का कार्यक्रम, गौ सेवा का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

ब्यावर 7 दिसंबर। पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म. सा. के 35वें स्वर्गारोहण दिवस पर श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ नवयुवक मंडल, ब्यावर द्वारा श्री मोहनसुख जीवदया फण्ड से जीवदया कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संयोजक अंकित जी सिंघवी एवं महावीर जी भंसाली ने इस अवसर पर गोमाता के लिए 655 किलोग्राम हरा चारा मसूदा रोड स्थित गौशाला भेजा। मंडल अध्यक्ष राकेश डोसी ने सभी सदस्यो का आभार व्यक्त किया।

हुब्बल्ली में दादावाड़ी का ध्वजारोहण

हुब्बल्ली 30 दिसंबर। दादावाड़ी का सप्तम ध्वजारोहण धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्य आचार्य श्री वि. मेघदर्शनसूरिजी म. के शिष्यरत्न मुनिश्री कीर्तिघोषविजयजी म. आदि ठाणा एवं साध्वी चारित्रवर्धनाश्रीजी म. की निश्रा में मुख्य ध्वजा लाभार्थी मुथा उकचंद रमेशकुमार गौतमचंद बाफना परिवार तथा पद्मावती देवी ध्वजा लाभार्थी हरकचंद भीमाजी कटारिया परिवार एवं नाकोड़ा भेरुजी ध्वजा लाभार्थी संघवी चम्पालाल हिम्मतमल केसाजी परिवार का भी गाजे बाजे के साथ स्वागत किया गया।

इस दादावाड़ी की प्रतिष्ठा पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में छः साल पूर्व हुई थी और इस सम्पूर्ण विशाल दादावाड़ी एवं कुशल भवन का निर्माण गणिनीवर्या श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. एवं साध्वीवर्या श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से हुआ है।

ध्वजारोहण के अवसर पर सत्तरभेदी पूजा विधिकारक विक्रम भाई एवं अरविंद भाई द्वारा पढ़ाई गई। पूजन के बीच विजय मुहूर्त में ध्वजारोहण गाजे बाजे के साथ हुआ। इस पावन मौके पर स्वरुचि भोजन का लाभ मुथा वागमल भुराजी बाफना परिवार ने लिया। कार्यक्रम की व्यवस्था जिनकुशल युवा मंच, खरतरगच्छ युवा परिषद, जिनकुशल महिला मंडल द्वारा की गई। कार्यक्रम का संचालन कार्यदर्शी पुखराज कवाड़ ने किया।

केयुप वर्षीतप आराधना समिति बाडमेर

बोथरा परिवार द्वारा वर्षीतप आराधकों का अभिनन्दन

बाड़मेर 8 दिसम्बर। खरतरगच्छ युवा परिषद केयुप बाडमेर के तत्वावधान में केयुप वर्षीतप आराधना समिति द्वारा जैन छात्रावास कल्याणपुरा में चल रहे सामूहिक वर्षीतप बियासणा के पारणे के दौरान वर्षीतप आराधकों का अभिनन्दन किया गया। खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से वर्षीतप तपस्या के बियासना के पारणे का लाभ समिति के रजत स्तम्भ लाभार्थी शा. हस्तीमलजी जगदीशचन्द्र रतनकुमार बेटा पोता खीमराजजी बोथरा परिवार दिल्ली द्वारा व शा. पारसमल सुनीलकुमार रमेशकुमार कच्चरचन्दोणी छाजेड़ परिवार पुंजासर वालों द्वारा लिया गया।

रजत स्तम्भ के लाभार्थी परिवार द्वारा सभी आराधकों का तिलक, माला व प्रभावना देकर व तपस्या की जय जयकार करते हुए तप की अनुमोदना के साथ हर्षोल्लासपूर्वक अभिनन्दन किया गया। केयुप वर्षीतप समिति द्वारा बियासने के लाभार्थी बोथरा व छाजेड़ परिवारों का तिलक, माला व आचार्यश्री की तस्वीर भेंट कर अभिनन्दन किया गया।

–कपिल मालू

नोखा जिन मंदिर का जीर्णोद्धार

नोखा 11 दिसंबर। बीकानेर के समीपवर्ती नोखामंडी के श्री पार्श्वनाथ परमात्मा के प्राचीन जिन मंदिर का जीर्णोद्धार पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा व निश्रा में संपन्न होने जा रहा है।

श्री जैन श्वेताम्बर ओसवाल पंचायती ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नथमलजी संखलेचा, मंत्री श्री धनराजजी लूणावत आदि ट्रस्ट मंडल की ओर से पूज्यश्री से जीर्णोद्धार कराने की विनंती की, जिसे पूज्यश्री ने स्वीकार करते हुए परमात्मा के उत्थापन का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया।

ता. 11 दिसंबर को उत्थापन विधि संपन्न की गई। विधि विधान पूज्यश्री के आदेश से सांचोर निवासी श्री प्रकाश जैन ने करवाया। उत्थापन विधि में नोखा के आगेवान श्रावकों के साथ बीकानेर के चिंतामणि मंदिर प्रन्यास के अध्यक्ष श्री निर्मलजी धारीवाल आदि अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे। उन्होंने परमात्मा को विधि विधान के साथ बिराजमान किया।

बसवनगुडी में तीन मुमुक्षुओं का अभिनंदन

बेंगलूरु 2 जनवरी। श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बसवनगुडी बैंगलोर के तत्वावधान में पूज्या माताजी म. साध्वी श्री रतनमालाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री डॉ. शासनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में कच्छ निवासी मुमुक्षु श्री रितेश कुमार जी शाह, श्री राजेश कुमार जी धोका और गदग निवासी श्री अमित कुमारजी बाफना का संघ की ओर से बहुमान किया गया।

आप सभी की जैन भागवती दीक्षा खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में आयोजित होगी। इस अवसर पर मुमुक्षु भाइयों ने अपने उद्‌गार व्यक्त कर समस्त साध्वी मंडल और सकल संघ को दीक्षा महोत्सव में पधारने का निवेदन किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए अरविन्द कोठारी ने कहा कि इस इन्टरनेट के युग में प्रव्रज्या ग्रहण करना बहुत ही दुष्कर कार्य है।

ट्रस्ट मंडल के चुन्नीलाल गुलेच्छा, अध्यक्ष निर्भयलाल गुलेच्छा, महामंत्री कुशलराज गुलेच्छा, कोषाध्यक्ष रंजीत ललवानी, पुखराज कवाड, गजेन्द्र संकलेचा ने तिलक, शाल, माला द्वारा बहुमान किया। खरतरगच्छ युवा परिषद् बेंगलूरु के ललित डाकलिया, शशी चौपडा, प्रकाश फोफलिया, पृथ्वीराज श्रीश्रीमाल ने एवं खरतरगच्छ महिला परिषद् से शान्ति गोठी, आरती जैन, विजयलक्ष्मी कोठारी, उषा चौपड़ा ने दीक्षार्थी भाइयों का अभिनन्दन किया।

–ललित डाकलिया

महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. का जन्म एवं दीक्षा दिवस मनाया

पालीताना 25 दिसंबर। पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभ- सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया खान्देश शिरोमणि महत्तरा पद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. का 79वां जन्म दिवस एवं 69वां दीक्षा दिवस पालीताना श्री जिनहरि विहार धर्मशाला में मौन एकादशी मिगसर सुदि 11 के दिन उल्लास के साथ मनाया गया।

गुणानुवाद सभा के प्रारंभ में पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. ने मंगलाचरण के साथ गीतिका प्रस्तुत की। पू. मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. ने कहा कि महत्तराजी स्वाध्यायी है। सदा-सदा आत्म चिंतन में लीन रहती है। इस अवसर पर पू. मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. ने भी अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए सुदीर्घ संयम पर्याय की अनुमोदना की।

पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पू. श्रेयांसप्रभसागरजी म. ने स्वरचित गीतिका प्रस्तुत की। पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ने संस्कृत भाषा में विभिन्न छन्दों में स्वरचित अष्टक का उपहार दिया।

पू. गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म., पू. मुदितप्रज्ञाश्रीजी म. पू. अमितगुणाश्रीजी म. पू. विरागज्योतिश्रीजी म. पू. विश्वज्योतिश्रीजी म. पू. श्रद्धांजनाश्रीजी म. पू. जिनज्योतिश्रीजी म. पू. कृतांजनाश्रीजी म. पू. मेघांजनाश्रीजी म. पू. श्रेयनंदिताश्रीजी म. पू. आज्ञांजनाश्रीजी म. आदि ने पू. महत्तराजी के जीवन के विशिष्ट पहलुओं पर अपने विचार रखते हुए गुणानुवाद किया।

श्री जिनहरि विहार ट्रस्ट के अध्यक्ष संघवी श्री विजयराजजी डोसी ने दूरभाष द्वारा वर्धापना दी। महामंत्री श्री बाबुलालजी लूणिया ने कहा- श्री जिनहरि विहार के विकास में पू. महत्तराजी म. का बहुत योगदान रहा है।

इस अवसर पर मुमुक्षु नीलिमा भंसाली, अनुराग भंसाली, जैन नाहर, संगीता देवी राजेशजी कोचर, शिखा कोचर ने मुक्तक, कविता व भजन प्रस्तुत किये। सभा का संचालन पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. ने किया।

पूजनीया महत्तराजी के दीक्षा व जन्म दिवस के उपलक्ष्य में पांजरापोल में लापसी का वितरण किया गया। वर्धमान शक्रस्तव महापूजन पढाया गया। अनुकंपादान किया गया। साधर्मिक भक्ति, वैयावच्च आदि कार्यक्रम संपन्न हए। बाहर से अनेक गुरु भक्त पधारे।

समारोह का लाभ गुरुभक्त गण एवं श्री मन्नुकुमारजी शांतिकुमारजी भंसाली परिवार लोहावट-चेन्नई वालों ने लिया।

कोयंबटूर में ज्ञानवाटिका प्रारंभ

कोयंबटूर 1 जनवरी। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञा व पू. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. सा. की प्रेरणा से कोयंबटूर में ज्ञान वाटिका का प्रारंभ किया गया। इसे प्रारंभ करने में खरतरगच्छ युवा परिषद् एवं महिला परिषद् केन्द्रीय समिति, कोयंबटूर श्री संघ, कोयंबटूर युवा, महिला परिषद् व अजयजी डागा का विशेष योगदान रहा।

सादर श्रद्धांजलि

श्री किशोरकुमारजी लुंकड़, बालोतरा

बालोतरा निवासी श्री किशोरकुमारजी लूंकड़ का ता. 24 दिसंबर को स्वर्गवास हो गया। स्वर्गवास से तीन घंटे पूर्व वे जहाज मंदिर पधारे थे। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. से वासक्षेप ग्रहणकर मंगल पाठ सुना था। उन्हें अपने अंतिम समय का बोध हो गया था। अंतिम पल वे जागृति के साथ नवकार महामंत्र का जाप करते रहे।

श्री लूंकड परिवार द्वारा बालोतरा में पचपदरा रोड पर श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनमंदिर एवं रणुजा धाम का स्वद्रव्य से निर्माण किया गया, जिसकी अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. आदि की पावन निश्रा में गत वर्ष 8 फरवरी 2020 को संपन्न हुई थी। जहाज मंदिर परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

श्री कंवरलालजी नाहटा, बीकानेर

बीकानेर निवासी श्रावक श्री कंवरलालजी नाहटा का ता. 27 दिसंबर को स्वर्गवास हो गया। वे धार्मिक श्रद्धासंपन्न सरल हृदयी श्रावक थे। उनके सुपुत्र श्री मनीषजी नाहटा बीकानेर केयुप के महामंत्री है। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

भरतभाई कोठारी, विमलजी बोथरा, राकेशजी धारिवाल, डीसा

डीसा निवासी भारत विख्यात जीवदया प्रेमी श्री भरतभाई कोठारी, मूल बाडमेर वर्तमान में डीसा निवासी श्री विमलचंदजी बोथरा एवं राकेशजी धारीवाल का ता. 26 दिसंबर को स्वर्गवास हो गया।

जीवदया एवं जिनशासन के कार्यों में सदैव तत्पर के अचानक स्वर्गवास से परिवार की क्षति के साथ-साथ शासन की भी बडी क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

श्रीमती कस्तूरी देवी दुग्गड, दुर्ग

दुर्ग छत्तीसगढ़ निवासी श्रीमती कस्तूरी देवी दुग्गड (ध.प. श्री बाबूलालजी दुग्गड) का देहावसान 13 दिसंबर को हो गया। आप धर्मस्वभाव वाली आराधक सुश्राविका थी। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

श्री चंद्रप्रकाशजी लोढा, जयपुर

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ जयपुर के अध्यक्ष श्रीमान प्रकाशचंदजी लोढा के ज्येष्ठ भ्राता श्री चंद्रप्रकाशजी लोढा सा. का दिनांक 14.12.2020 को स्वर्गवास हो गया। श्री लोढाजी अत्यंत सरल स्वभाव के सादगी पसंद व्यक्तित्व के धनी थे। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

श्री देवराजजी सेठिया, दुर्ग

श्री ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट ऋषभनगर के ट्रस्टी, श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ दुर्ग के मंदिर निर्माण समिति के सदस्य श्री देवराज जी सेठिया पुत्र स्व.श्री अखराजजी सेठिया का स्वर्गवास दि. 30 दिसंबर को हो गया। संघ के वरिष्ठ एवं कर्मठ कार्यकर्ता थे। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

श्री अश्विन भाई, बेंगलूरु

बेंगलुरु 20 दिसंबर। हजारों श्रावक-श्राविकाओं में नव चेतना-नव संस्कारों के पोषक विधिकारक व धार्मिक पाठशाला के अध्यापक श्री अश्विन भाई शाह का 20 दिसम्बर को देहावसान हो गया। गुजराज ऊण मूल के अश्विन भाई ने मेहसाणा स्थित धार्मिक पाठशाला से कर्मग्रंथों का अध्ययन कर धार्मिक शिक्षा अर्जित की। विगत 32 वर्षों से शहर के विभिन्न संघों के जरिए जिनशासन की सेवा में धार्मिक अध्यापन, पूजा-पूजन, अनेक अंजनशलाका, विधि-विधान-अनुष्ठान सुकृत कार्यों में संचालन किया।

पूज्य गच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहब की निश्रा में अवन्ति तीर्थ उज्जैन, कुशल वाटिका बाडमेर, रणुजा धाम बालोतरा, गजमंदिर केशरियाजी, कृष्णगिरि तीर्थ, चैन्नई आदि स्थानों पर संपन्न हुए प्रतिष्ठा में विधि-विधान आपके द्वारा संपन्न हुआ। जहाज मंदिर परिवार अरिहन्त प्रभु से प्रार्थना करता है कि उनकी धर्ममय आत्मा सद्गति को प्राप्त हो और दु:ख की इस घड़ी में परिजनों को संबल मिलें।

श्री ओटमलजी छाजेड़, चैन्नेई

चेन्नई 2 दिसंबर। केशवणा निवासी दानवीर सेठ श्रीमान शा. ओटमलजी कपूरचंदजी छाजेड़ का स्वर्गवास हो गया। आपने जिनशासन के अनेक कार्य किए एवं कराए हैं। केशवणा निवासी एवं चैन्नई प्रवासी श्री छाजेड सरल स्वभावी एवं शासन-भक्त थे। वे संघ के आगेवान श्रावक थे। जहाज मंदिर श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट के ट्रस्टी रहे थे। जिन धर्म व शासन के प्रति उनका बहुत अहोभाव था। जहाज मंदिर परिवार की ओर हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री देवीचंदजी मालू, बाडमेर

बाडमेर निवासी श्री देवीचंदजी मालू का ता. 2 जनवरी 2021 को स्वर्गवास हो गया। वे पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. के सांसारिक ससुर, पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. श्रेयांसप्रभसागरजी म. के सांसारिक नानाजी व पूजनीया साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म. के सांसारिक पिताजी थे।

शासन व धर्म के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित थे। आपकी जिनशासन के प्रति अटूट श्रद्धा थी। सभी त्यागी महापुरुषों के प्रति अपार भक्ति थी। साधु साध्वियों की वैयावच्च भक्ति में अपार रुचि थी। जहाज मंदिर परिवार की ओर हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री पुखराजजी मंडोवरा, सिणधरी

सिणधरी राजस्थान निवासी श्री पुखराजजी उदयराजजी मंडोवरा का दि. 2 दिसंबर 2020 को हो गया। सरल स्वभावी, मृदुभाषी, संघ सेवा में समर्पित श्री मंडोवरा की जिनशासन के प्रति अटूट श्रद्धा थी। सभी त्यागी महापुरुषों के प्रति अपार भक्ति थी। जहाज मंदिर परिवार की ओर हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

हमारे नये संस्था संरक्षक

श्री हरिभद्रसूरि स्मृति मंदिर, चित्तोडगढ

हमारे नये संरक्षक

शा. जीवराजजी विजय विनीत खटोड, चित्तोडगढ

कहानी

जीवन बदलने वाली कहानी

मन की हालत

प्रस्तुति : गौतम संकलेचा

एक बार एक सेठ ने पंडितजी को निमंत्रण किया पर पंडितजी का एकादशी का व्रत था तो पंडितजी नहीं जा सके पर पंडितजी ने अपने दो शिष्यों को सेठ के यहाँ भोजन के लिए भेज दिया।

पर जब दोनों शिष्य वापस लौटे तो उनमे एक शिष्य दुखी और दूसरा प्रसन्न था!

पंडितजी को देखकर आश्चर्य हुआ और पूछा बेटा! क्यों दुखी हो! क्या सेठ ने भोजन में अंतर कर दिया?

'नहीं गुरु जी'

क्या सेठ ने आसन में अंतर कर दिया?

'नहीं गुरु जी'

क्या सेठ ने दक्षिणा में अंतर कर दिया?

'नहीं गुरु जी' बराबर दक्षिणा दी। 2 रुपये मुझे और 2 रुपये दूसरे को।

अब तो गुरुजी को और भी आश्चर्य हुआ और पूछा फिर क्या कारण है? जो तुम दुखी हो?

तब दुखी चेला बोला- गुरुजी मैं तो सोचता था सेठ बहुत बड़ा आदमी है कम से कम 10 रुपये दक्षिणा देगा पर उसने 2 रुपये दिये इसलिए मैं दुखी हूँ!

अब दूसरे से पूछा तुम क्यों प्रसन्न हो?

तो दूसरा बोला गुरुजी मैं जानता था सेठ बहुत कंजूस है आठ आने से ज्यादा दक्षिणा नहीं देगा पर उसने 2 रुपए दे दिये तो मैं प्रसन्न हूँ!

बस यही हमारे मन का हाल है संसार में घटनाएं समान रूप से घटती है पर कोई उन्हीं घटनाओं से सुख प्राप्त करता है कोई दुखी होता है, पर असल में न दुख है न सुख ये हमारे मन की स्थिति पर निर्भर है!

इसलिए मन को प्रभु चरणों मे लगाओ, क्योंकि कामना पूरी न हो तो दुख और कामना पूरी हो जाये तो सुख, पर यदि कोई कामना ही न हो तो आनंद।।

साधु साध्वी समाचार

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक **खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.** पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. ठाणा-2 ने ता. 4 जनवरी 2021 को जहाज मंदिर से ब्यावर की ओर विहार किया। ता. 8 जनवरी को पाली, जहाँ प्रभु पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक के पावन अवसर पर पूज्यश्री का प्रवचन होगा। ता. 13 जनवरी 2021 को ब्यावर पधारेंगे जहाँ ता. 15 जनवरी 2021 को उनकी पावन निश्रा में रेल मंदिर में श्री चन्द्रप्रभ भगवान के मंदिर की प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहाँ से विहार कर दुठारिया, पाली होते हुए ता. 26 जनवरी 2021 को रामा पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में त्रिदिवसीय अर्हन् महापूजन का आयोजन होगा। वहाँ से जहाज मंदिर पधारेंगे।

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक **आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा.** ने जहाज मंदिर से ता. 1 जनवरी 2021 को ब्रह्मसर की ओर विहार किया है। वे सिवाना, बालोतरा, नाकोडाजी, बायतू होते हुए ब्रह्मसर पधारेंगे, जहाँ उनकी पावन निश्रा में 15 जनवरी 2021 को जिनमंदिर का द्वारशाख मुहूर्त्त संपन्न होगा। यह ज्ञातव्य है कि उनकी पावन प्रेरणा से ब्रह्मसर में नागेन्द्र जैन टेम्पल, विघ्नहरा पार्श्वनाथ पद्मावती धाम का निर्माण हो रहा है।

पूनीया गणिनी प्रवरा **श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा नंदुरबार बिराज रहे हैं।

पूजनीया माताजी म. **श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.** आदि ठाणा ता. 18 जनवरी 2021 को बैंगलोर से पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा.** आदि ठाणा 5 जहाज मंदिर से विहार कर सिवाना पधार गये हैं।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर बाजार में था। वह अपनी मस्ती में जा रहा था।

अचानक एक व्यक्ति आया और उसकी पिटाई करने लगा। जटाशंकर हक्का-बक्का रह गया। वह बोलने ही जा रहा था कि भाई! मुझे क्यों मार रहे हो?

तभी वह व्यक्ति बोल उठा- ले घटाशंकर ले! क्या सोचकर तूंने मेरा अपमान किया था। अब ले मजा! ऐसा कहकर वह धडाधड जटाशंकर को मारने लगा।

जटाशंकर मुस्कुराने लगा। वह मार खाता जा रहा था और हंसता जा रहा था।

पिटाई करने वाला व्यक्ति और क्रोधित होकर उसे मारने लगा।

आखिर वह थका। और चेतावनी के साथ रवाना हुआ।

जटाशंकर को मार खाते और हंसते देखकर सामने खडे एक व्यक्ति ने पूछा- भैया! तुम मार खा रहे थे। बदले में उसकी पिटाई करना तो दूर, तुम अपना बचाव भी नहीं कर रहे थे! ऐसा क्यों?

जटाशंकर हंसता हुआ बोला- मैंने उसे ठग लिया।

- सो कैसे?

- अरे वह मुझे घटाशंकर समझकर मार रहा था। जबकि मैं तो घटाशंकर था ही नहीं। मैं तो जटाशंकर हूँ। बस! घटाशंकर को मार पडती देखकर मैं मुस्कुरा रहा था। उसे ठगने में आज मुझे मजा आ गया।

जटाशंकर की पिटाई हो रही थी, फिर भी दुखी होने के बदले वह मुस्कुरा रहा था। क्योंकि वह समझ रहा था कि मार घटाशंकर को पड रही है, मुझे नहीं। और मैं घटाशंकर हूँ ही नहीं, वो बिचारा मुझसे पूरा ठगा गया। उसने यह नहीं सोचा कि भले घटाशंकर के नाम से पर मार तो मुझे ही पड रही है। घटाशंकर को मार रहा है, यह सोच उसके लिये आनंद का कारण थी।

यह कषाय भाव की चरम परिणति है।

केयुप केलेंडर का विमोचन

मांडवला 31 दिसंबर। जहाज मंदिर में दि. 31 दिसंबर 2020 को पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहब, पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी महाराज साहब आदि ठाणा एवं पूज्या प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूज्या साध्वीवर्या श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूज्या साध्वीवर्या श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के सानिध्य में केयुप केलेंडर का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर केयुप के राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष श्री पुरुषोतम सेठिया, पवन नाहटा, जितेन्द्र चोपडा, महावीर बोथरा, पुरुषोतम मालू आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे।

श्री जिनहरि विहार पालिताणा में महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. का जन्म एवं दीक्षा दिवस मनाया

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2021-2023 Date of Posting 7th

श्री गुणायाजी तीर्थ का जीर्णोद्धार

मांडवला 7 दिसंबर। परमात्मा महावीर की देशना स्थली एवं परमात्मा महावीर के प्रथम गणधर श्री गौतमस्वामी की केवलज्ञान स्थली अतिप्राचीन श्री गुणायाजी तीर्थ का आमूलचूल जीर्णोद्धार पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न होगा।

यह जीर्णोद्धार श्री जैन श्वेताम्बर भंडार तीर्थ पावापुरी के तत्त्वावधान में संपन्न होगा। तीर्थ ट्रस्ट के तत्त्वावधान में जीर्णोद्धार समिति बनाई गई है। इस समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रकुमारजी पारसान, कोलकाता को बनाया गया है। वे पावापुरी तीर्थ के अध्यक्ष हैं। जीर्णोद्धार समिति के संयोजक संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा होंगे। इस समिति में श्री जिनेन्द्रचंद्रजी सुचंती बिहारशरीफ, श्री सुभाषजी बोथरा रांची, श्री शांतिलालजी बोथरा कोलकाता, श्री प्रदीपजी बैद कोलकाता, श्री तिलोकचंदजी पारख रायपुर एवं श्री महावीरचंदजी मेहता बैंगलोर को सम्मिलित किया गया है।

इस जीर्णोद्धार का कार्य शीघ्र ही प्रारंभ होगा।

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408